छोड़ो यह सुख दुख का धाम

वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

(सत्संदेश मई, 1961 में प्रकाशित प्रवचन)

जब से दुनिया बनी है तब से ही हम इस दुनिया में आये और अभी तक हम ने अपने असल घर को नहीं पाया है। आत्मा उस परमात्मा के साथ थी।

कहो कबीर एह राम की अंश ।

कब से दुनिया बनी, इस का भी अंदाजा ठीक तौर से लग नहीं सकता। आर्य सम्मत चार अरब कुछ साल है। समझे। वह भी इस प्रलय के बाद का। इससे पहिले कितनी प्रलय आई, कितनी महाप्रलय आई, इसका कुछ पता नहीं। तो अनगिनत कहो, लाइन्तहा मुद्दतों से हम निज घर से दूर हुये, परमात्मा से हटे कहो, और अब तक हम उस हालत में जा रहे हैं। अगर हमने प्रभु को पाया होता तो हम किसी और हालत में बैठे होते। आप देखते हो कि हमें अपने आप का एहसास (होश) नहीं कि हम कौन हैं ? हमें यह नहीं पता कि परमात्मा, जिस को सब वेद शास्त्र, ग्रन्थ पोथियां पुकार पुकार कर कहती हैं कि वह घट-घट वासी है, ज़र्रे ज़र्रे (कण कण) में समा रहा है मगर हमें नजर नहीं आ रहा। उस का एहसास नहीं। तो इसका मतलब यही है कि हम अभी अविद्या में हैं, भूल में हैं। हमें न अपने आप की सूझत है न प्रभु की सूझत है। अब ऐसी हालत में मनुष्य जीवन कई बार मिला होगा, अब का तो हमारे सामने सबूत है ना कि हम मनुष्य जीवन धारण किये हुये हैं !

मानुष जन्म बड़ा दुर्लभ जन्म है। यह चौरासी लाख जिया-जून की सरदार जूनी है। समझे ! इसमें एक खास फ़जीलत (बड़ाई) है। वह क्या कि इसमें आकाश-तत्व प्रबल है। यह सत्य और असत्य का निर्णय कर सकता है, इसमें विवेक बुद्धी है, यह सत्य को धारण कर सकता है और असत्य से मुंह मोड़ सकता है। यह फ़जीलत केवल मनुष्य जीवन में ही इन्सान को मिली है, और किसी जूनी में नहीं है। तो इसमें-यह (मनुष्य जीवन) Highest rung of creation है (सर्वोत्तम रचना है प्रभु की) अगर यह (मनुष्य) एक कदम और ऊपर चढ़ जाये तो आना-जाना खत्म हो गया।

अगर इस मनुष्य जीवन से हमने फ़ायदा नहीं उठाया, क्या, मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ कर अपने आपको नहीं जाना और प्रभु को पहिचाना नहीं, तो फिर बाद में वहीं चक्कर सामने है। जब महात्मा आते रहे, हमेशा से ही, हम भूल में थे, वे हमें चिताते रहे, जगाते रहे, असलियत की तरफ हमारा मुंह करते रहे। जो जो उन से ताल्लुक रखते रहे वह

हकीकत के नज़दीक हो गये। जब वह चले गये, To err is human इन्सान भूल में पड़ गया। फिर कोई और महात्मा आया, उसको जगा गया। यहां तक कि आज हम बीसवीं सदी में बैठे हैं, जितने महापुरुष आये उनके बेशकीमत (अनमोल) कलाम हमारे पास मौजूद हैं। समझे। उनमें उनके ज़ाती (निज के) तजरुबात के निचोड़ हैं जो हीरे और जवाहरात से भी ज्यादा कीमती हैं। ''उमलीक लाल एह बचन।'' हमारे दिल में उन सब कलामों के लिये जो हमारे पास मौजूद है, और उन महापुरुषों के लिये जिन्होंने वह उच्चारण किये, सबके लिये इज्जत है, और रहेगी। वह एक परमात्मा में कहिये Brotherhood of God परमात्मा की रचना में जो भ्रातृभाव है कहो, उसके बड़े Shining star थे। जब वह आये दुनिया को रौशनी दे गये। ऐसे महापुरुष हमेशा दुनिया में आते रहे, हैं, और आते रहेंगे। तो Demand और Supply का नियम अटल है। जहां भूख है वहां रोटी है, जहां प्यास है वहां पानी है। यह सिलसिला बना रहा, बना हुआ है, और बना रहेगा। जो बच्चा हजारों साल पहिले पैदा हुआ था, उस वक्त उसके खुराक के लिये, पैदा होने से पहले कुदरत ने दूध रखा था। जो आज पैदा हो रहे हैं उसके लिये भी वही असूल है। जो आगे आयेंगे क्या वह बन्द हो जायेगा? नहीं! नियम तो अटल है, चलता रहा, चलता है, चलता रहेगा। जब जब इन्सान के अन्तर तड़प हकीकत की तरफ जाने की पैदा हुई, उसके मुहैय्या करने के लिये सामान बनता रहा, बनता है, और बनता रहेगा। आज आपके सामने एक दो महात्माओं की बाणी रखी जायेगी। कभी किसी महात्मा की बाणी, कभी किसी की कभी किसी की- सब महात्माओं की जबांदानी अपनी है, तरीका बयान अपना अपना है, मगर नफसे-मज़मून (बात) वही है। इस वक्त एक छोटा सा शब्द कबीर साहब की बाणी फिर एक शब्द स्वामीजी महाराज से आपके सामने रखा जायेगा। आप गौर से सुनिये वह क्या फर्माते हैं। कबीर साहब का शब्द है यह, वह फर्माते हैं कि ऐ भाईयो तुम होश में आओ। देखो तुम क्या कर रहे हो, और तुम्हे क्या करना चाहिये।

जाग प्यारी अब का सोवे । रैन गई दिन काहे को खोवे ॥

कबीर साहब फर्माते हैं, ऐ सुरत ऐ आत्मा तू कब तक सोती रहेगी। अब तो जाग। मनुष्य जीवन मिला है, यह अब जागने का वक्त है। हम सो रहे हैं। कहां पर ? जब से दुनिया बनी है, ऋषि मुनि महात्मा, सब यही पुकारते रहे कि अरे भाईयो ! तुम सो रहे हो। वेद भगवान क्या कहता है ? Awake, Arise, and stop not till the goal is reached. जागो! इसका मतलब है हम कहीं सो रहे हैं ! खड़े हो जाओ, और उस वक्त तक सांस मत लो जब तक कि तुम मन्जिल मकसूद तक पहुंच न जाओ। यही गुरु अर्जुन साहब ने फर्माया है।

उठ जाग वटाऊड़या तैं क्या चिर लाया ।

ऐ रास्ते के मुसाफिर ! तू उठ, तू क्यों देर कर रहा है ! यही कबीर साहब फर्मा रहे हैं ।

उठ, जाग ! ''जाग प्यारी तू काहे को सोवे ! '' अब दिन है, अब भी सोती रहेगी ? दिन से मुराद है कि मनुष्य जीवन मिला है तुझ को, अगर अब भी तू सोती रही फिर या नसीब कब यह अवसर मिले ! मनुष्य जन्म ही एक ऐसा समय है ।

भई प्राप्त मानुख देह हुरिया, गोबिन्द मिलन की एह तेरी बिरिया ।

मानुष जन्म बड़े भागो से मिला है। यह एक ऐसा वक्त है जिसमें तुम उस प्रभु को पा सकते हो। तो मनुष्य जन्म बड़े भागो से मिला है। इस में उस प्रभु को पाने का एक बड़ा अच्छा समय है, एक Golden Opportunity हम को मिली है।

यह तो समय मिला अति सुन्दर ।

बड़ा सुन्दर मौका है, सुनेहरी वक्त है जो हमारे हाथ आया है। इस में हम और जो जो काम करते हैं उन के अलावा, जब तक हम यह काम नहीं करते, जन्म बेअर्थ चला जाता है।

अवर काज तेरे किते न काम । मिल साध संगत भज केवल नाम ।।

ऐ भाई और जितने तू काम कर रहा है, यह तेरी आत्मा के अनुभव करने और प्रभु अनुभव को पाने में मदद नहीं करते हैं। कोई ऐसे कर्म है जो तुम्हारे उस तरफ मददगार हो सकते हैं। कहते हैं, हां, किसी अनुभवी पुरुष की सोहबत और नाम का जपना, यह दो ऐसे काम है जो तुम्हारी अपने आप के जानने और प्रभु के देश में पहुंचने के लिये मददगार चीजें हैं। अगर यह काम मनुष्य जीवन पा कर तुमने कर लिया, तुम्हारा जन्म सफ़ल हो गया। जो मनुष्य जीवन पा कर फिर इन्द्रियों के भोगों-रसों में, जैसे नीची जूनियों में, इन्सान फंसा पड़ा है, अगर उसी में लगा रहा तो मनुष्य जीवन बरबाद चला गया। तो कबीर साहब बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि ऐ सुरत, तू सोई रही अब तक। कहां पर ? मन-इन्द्रियों के घाट पर अपने आप को भूली हुई रही। यह भी मालूम नहीं कि कब से हम प्रभु से जुदा हुये थे। हमारा कोई निज घर है भी, हमारा सच्चा पति और परमात्मा ? वह पति परमात्मा है ! उस का कभी चित्त चेते, ख्याल तक भी नहीं आया। जैसे ख्वाबे खरगोश में (खरगोश की सी नींद में) सो रहा है। कभी होश भी नहीं आती कि मैं कहां हूँ कहां नहीं। यही हालत हमारी जा रही है। तो कहते हैं, अभी तो दिन चढ़ा है, तू अब भी सो रही है। ''जाग प्यारी अब काहे सोवे रैन गई दिन काहे को खोवे '' । रात, पिछला समय तो गुजर गया अब दिन चढ़ा है, मनुष्य जीवन, यह भी गुजरा जा रहा है। अब भी तू सो रही है ? सब महात्माओं ने यही जोरदार लफ़जों में फर्माया है -

मोह माया सबो जग सोया । एह भरम कहो क्यों जाई ।।

सारा जहान ही मोह माया में सो रहा है। माया कहते हैं भूल को ! हम आत्मा थे, इस जिसम के चलाने वाले। जिसम का रूप बन गये। हम अपने आपको भूल गये। हम इस मकान के मकीन (निवासी) थे। मकान के दरोदीवार बन गये। इस का नाम है माया ।

एह शरीर मूल है माया ।

माया का मूल शरीर से चलता है। और फिर माया आई, भूल में पड़े, तो मोह में फंस गये। इसी में सारा जहान सो रहा है। क्या अमीर, क्या गरीब, क्या आलम, क्या बेइलम, हाकिम और मेकूहम सब एक ही रस्सी में बन्धे पड़े हैं। कहते हैं अरे भई, अभी तो दिन चढ़ा है, अब भी तुम मन-इन्द्रियों के घाट पर सोये रहोगे ? क्यों दिन को भी जाया (नष्ट) कर रहे हो ! रात तो गुजर गई,पता नहीं पिछला समय था कि नहीं। जैसे रात सोये, पता नहीं लगता गुजरी है कि नहीं, क्या था क्या नहीं, घुप नींद (गहरी निद्रा) में गुजर गई, ऐसे ही पिछला, जब से हम दुनिया में आये, प्रभु से दूर हुये, जिसका कोई अन्दाजा लगा नहीं सकता। यह तो एक ख्वाब की तरह समय गुजर गया। ख्वाब क्या, भूल, बड़ी गहरी नींद में गुजर गया। पता ही नहीं कि रात गुजरी है। अब तो दिन चढ़ा है। अब भी अगर तुम ऐसी ही मोह माया में सोये रहोगे, इन्द्रियों के घाट पर भूल में पड़े रहोगे तो जागोगे कब भई ? बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि ऐ सुरत अब जाग। आखिर देखिये -

कहो कबीर यह राम की अंश ।

उस प्रभु को इस का प्यार है। जो प्रभु में समा गये उनके अन्तर भी इन जीवों के लिये प्यार है, कुदरती बात है। वह समझते हैं, यह सारे बच्चे हैं, अपने हैं, जितने जल्दी यह जाग उठें, जितने जल्दी यह अपने आप को जान जायें, प्रभु को पा जायें, उतने ही हमारा सुख हो जाये। तो प्यार से समझा रहे हैं, बड़े प्यार से-

जाग प्यारी अब का सोवे, रैन गई दिन काहे को खोवे ।
जिन जागा तिन माणक पाया, तैं बैरी सब सोई गवाया ॥

कहते हैं जो जाग उठे उन्होंने क्या पाया ? कहते हैं बड़ी बेशकीमत (अनमोल) हीरे और जवाहरात से ज्यादा कीमती उनको चीज मिली। क्या ? अपने आपको जान गये, प्रभु को पा गये। अरे भई तू बौरी (पागल) बनी रही, मन-इन्द्रियों के भोगो-रसों में लम्पट हो कर तुझे होश ही ठिकाने न रही,तू अपना जन्म गंवा बैठी। जो जाग उठे, वह तो माणक को पा गये, क्या, प्रभु को पा गये। मनुष्य जीवन का जो सबसे बड़ा आदर्श था उसको हासिल कर गये। ऐसी चीज को पा गये जिसको पा कर सब कुछ पाया हुआ हो जाता है, यह उपनिशद कहते हैं। कहते हैं, जो जागे उन को क्या मिला ? कहते हैं वह एक माणक, बड़ी बेशकीमत चीज को पा गये। और तूने क्या किया ? तू बौरी बनी रहो, इन्द्रियों के भोगों-रसों में। बौरी किसको कहते हैं ? जिसके होश ठिकाने न हों। करता तो है सब कुछ, मगर उसकी होश ठिकाने नहीं कि मैं क्या कर रहा हूँ ? तो कहते हैं तू बौरी बनी रही बर्बाद कर दिया जीवन। मनुष्य जीवन बड़े भागों से मिला है। अब तक का जो हिस्सा है, दस साल, बीस साल, पचास साल, जितनी किसी की आयु है, यह तो बर्बाद चली गई ना ! फिर अब भी अगर तू

सो रही है, तो कब जागेगी ? कहते हैं इसलिये ऐ सुरत, तू जाग होश में आ तेरा जन्म बर्बाद चला गया। पिछले सारी ही, जब से दुनिया बनी तब से ही तो हम रहे ख्वाबे खरगोश में, अब फिर दिन चढ़ा है भई, इस वक्त तुम यह काम कर लोगे, तो कर लोगे, नहीं तो -

पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे, एहला जन्म गंवाया।

एक बार मनुष्य जीवन हाथों से निकल गया फिर या नसीब, कब दुबारा मनुष्य जन्म मिले, फिर यह काम कर सको। तो कहते हैं, अब तो भई दिन चढ़ा है, अब तू क्यों सो रही है ? होश में आ ।

जिन जागा तिन माणक पाया, तैं बौरी सब सोय गंवाया ।
पिया तेरे चतुर तू मूर्ख नारी, कबहुं न पिया की सेज संवारी ।।

फर्माते हैं कि जो तेरा पिया है, आत्मा का सच्चा पति परमात्मा है, वह तेरा सच्चा पति था, मगर वह चतुर था, तू मूर्ख बनी रही। अब मूर्ख और चतुर का कैसे मेल हो ? मूर्खता क्या थी? मूर्ख आदमी को अन्तर एहसास नहीं होता कि मैं क्या कर रहा हूं। मूर्ख आदमी अपनी मूर्खता में बड़ा तत्पर है। कहते हैं कि तू अपनी गलती में है। उस गलती में फिर मस्त हो रही है। सींग अड़ाये बैठी है। वह तो अति चतुर थे, बता कभी मनुष्य जीवन में तुमने उस पति परमात्मा के आने के लिये तैयारी भी कभी की ? मनुष्य जीवन ऐसे में गुजार रहे हो, कभी उस प्रभु के आने को सेज तैयारी की है ? क्या किया ? दुनिया के कामों में लगे रहे, इन्द्रियों के भोगों-रसों में लम्पट रहे, मैं-मैं, तू-तू के झगड़ों में सरगरदान रहे, अपने आपे की होश न आई। इसी मूर्खता में अब तक तो जिन्दगी गुजर गई। आगे और खत्म होने को है। आखिर वह आखिरी तब्दीली जिस को हम लफ़्ज मौत से अदा करते हैं, वह तो नजदीक आ रही है ना ! बहुत गई थोड़ी रही।

अगे नेड़े आया पिछे रहिया दूर ।

अब तो जाग, कब जागेगी ? वह चतुर, तू मूर्ख बनी रही। उस पिया के आने की कभी सेज तू ने संवारी नहीं, कभी ख्याल तक नहीं आया, उसके आने के पहिले तैयारी ही सही, कुछ न कुछ तो इन्सान करता है। किसके लिये करता है? जिसके लिये कुछ लगन हो ! दुनिया की लगन तो बनी रही, जिसकी लगन हो उसके लिये मिलने की तैयारी हो सकती है। जिसकी लगन ही न हो ? अरे भई तेरे अन्तर दुनिया का प्रेम-प्यार जिसे हम प्रेम नहीं कुप्रेम कहेंगे। दुनिया की प्रीतियों में, जिसको हम प्रीति नहीं कहेंगे बल्कि बेप्रीति कहेंगे, उसमें तू लम्पट रही। और तू मूर्खता में तत्पर रही, कभी उस प्रभु की सेज को सँवारने का ख्याल तक भी नहीं आया। इस भूल में अरे भई तू कब तक रहेगी ? तेरा आखिरी दिन जिसको हम मौत कहते हैं, वह नजदीक आ रहा है। अगर वह आ गया तो फिर तेरी तैयारी का कोई सामान नहीं रहेगा, मनुष्य जीवन हाथों से निकल जायेगा और फिर पछताना पड़ेगा। गुरु नानक साहब ने बड़े प्यार से एक जगह समझाया है, फ़र्माते हैं -

भुलावड़े भुल्ली भुल भुल पछोताणी ।

हम भूल में फंसे रहे, Grand delusion (भारी भूल) है। यह दुनिया बदल रही है, जिसम बदल रहा है, जगत असत्य है Changing है, बदल रहा है, एक-रस नहीं, मगर हम इसे सत्य भास रहे हैं। आत्मा, जो सत्य वस्तु थी, उसका कभी चित्त चेते, ख्याल तक भी नहीं। अरे भई हम इस हकीकत को कैसे अनुभव कर सकते हैं ? यह ख्याल कभी नहीं आया। कहते हैं, हम भूल में पड़े रहे, जब जब मनुष्य जीवन मिला तो भी भूल में रहे। होश आई कब ? जब अन्त समय आया ।

कहें कबीर तेही नर जागे, जब जम का डन्ड मूंड में लागे ।

उस वक्त आँख खुली जब जिसम छुटता नजर आया, यह क्या किया मैंने, यह ख्याल प्रबल हुआ। दो आँसू बहाये और चल दिये। जब जब भी मनुष्य जीवन मिलता रहा इन्हीं इन्द्रियों के भोगों-रसों में लम्पट रह कर इसी भूल में रहा, सोया रहा। अन्त समय थोड़ी होश आती रही, दो आंसू बहाते रहे और चलते रहे। बस। फिर या नसीब कब मनुष्य जीवन मिले। सब महापुरुष एक ही बात कहते हैं। कबीर साहब और गुरु नानक साहब अड़तालीस साल इकट्ठे रहे हैं। किसी एक महात्मा की बाणी पढ़ो, दूसरे की पढ़ो। बिलकुल ख्याल वही मिलेगा। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, अरे भई वह तो चतुर था तू बिलकुल मूर्ख बनी रही, उसके आने के लिये कभी तूने तैयारी का भी ख्याल नहीं किया। मनुष्य जीवन गुजरा जा रहा है। आखिर तुम मनुष्य जीवन में ही यह काम कर सकते हो, और किसी में नहीं।

पिया तेरे चतुर तू मुर्ख नारी, कबहूं न पिया की सेज संवारी।
तैं बौरी बौरापन कीन्हा, भर जीबन पिया आप न चीन्हा ।

कहते हैं तू बौरी बनी रही और बौरापन में ही जीवन गुजार दिया, दीवानगी ही में।

स्वामी रामातीर्थ थे। कईयों ने सवाल किया कि भई यह जो तुम कर रहे हो यह पागलपन ही न हो। कहने लगे हां भई, इस पागलपन पर उस आदमी को हरफ़ उठाने का हक है जिस को दोनो तरफ के पागलपन का पता हो। मुस्तनिद (विश्वस्त) राय तो उसी की हो सकती है ना! कहते हैं, हां हम पागल हैं। पा-गल्ल, राज़ को, भेद को, पा गये, इसलिये पागल हो गये। अरे भई तुम सौदाई ना हो ! कहते हैं हां हम सौ-दांवों को जानने वाले हैं,कैसे मन-इन्द्रियों के घाट से छूट सकते हैं, मन के हाथ से छूटना कोई खालाजी का घर नहीं, बड़े बड़े ऋषि, मुनि, महात्मा इसके हाथों से रोते चले गये। अरे भई हम हर रोज़ रो रहे है। हम सौ दावों के जानने वाले हैं, कैसे इससे निकला जाता है। तो कहते है हम दुनिया के लोग बौरे बने रहे हैं, उधर के बावरेपन का पता नहीं। कहते हैं, तू बौरी बनी रही। दुनिया के, इन्द्रियों के भोगों-रसों में लम्पट, रही। इसी दीवानगी में जीवन गुज़ार गई। अन्त समय जब आया तो होश आई ! वह न आने के बराबर है। It is too late.

अब पछताये होत क्या, जब चिड़ियां चुग गई खेत ।

तो फर्मा रहे हैं, बड़े प्यार से, ''तैं बौरी बौरापन कीन्हा भर जीबन पिया आप न चीन्हा''। जवानी थी, होश-हवास तेरे बरकरार (कायम) थे, तू सब कुछ कर सकती थी। मगर जवानी के ज़ोम में, इन्द्रियों के भोगों-रसों में लम्पट रहने के कारण यह मनुष्य जीवन गुज़र गया, उस प्रभु को ना चीन्हा। याद रखो प्रभु को पाने के लिये भी होश हवास बाकायदा होने चाहिये। कई भाई कहते हैं अभी हम जवान हैं, बूढ़ा हो लेने दो, फिर देखेंगे। उनके लिये बात यह है। भई क्या हमने कोई पट्टा लिखाया है कि जरूर हम बूढ़े होंगे? पहिली बात। होंगे या नहीं, Who knows (कौन जाने) किस वक्त Cut off हो जाये। अगर मान भी लिया जाये, कितने लोग हैं जो बड़ी उम्र में जाकर बाहोश रहते हैं। सिर डगमगाता है, नैनों में ज्योति नहीं है, कान सुनते नहीं, चल सकता नहीं, मोहताज हो जाता है। घर वालों के लिये एक बोझ बन जाता है। वह डियोढ़ी में एक चारपाई बिछा कर दे देते हैं कि लेटे रहो, कुत्ते हांकते रहो, बच्चों को खिलाते रहो, उनके वह कुछ काम करना चाहता है, कर नहीं सकता, लाचार हो जाता है। जिन्होंने जिन्दगी में ब्रह्मचर्य की रक्षा नहीं रखी, जीवन नेक-पाक नहीं बनाया, बड़ी उम्र में जाकर कैसे कर सकते हैं ? उनका दिल दिमाग नहीं ठिकाने। इसलिये गुरु अमरदासजी ने फर्माया है -

काली जिनी ना राविया धौली रावे को।

जिन्होंने जवानी में जब इसके बाल काले थे, उसमें उस प्रभु को नहीं पाया, अन्तर आत्में उस का रस नहीं लिया, कहते हैं बूढ़ी उमर में कर सकता है, मगर कोई कोई। हर कोई नहीं। जिससे पूछो, जी फिर करेंगे, अभी खा पी लेने दो। भई खाओ पीओ, जब होश हवास ठिकाने हैं, जोबन है, जवानी है, होश हवास ठिकाने हैं, तुम काम कर सकते हो, इस मनुष्य जीवन से पूरा फ़ायदा उठा सकते हो, जवानी में मस्त रहे, इन्द्रियों के भोगों-रसों में बौरापन में जीवन गुजार दिया। नतीजा क्या ? इसमें प्रभु के रस को पाना था, दुनियां के रसों में लम्पट हो गये, जन्म बर्बाद कर गये। कितनी खूबसूरती से बयान करते हैं, हमारी हालत क्या हो ही है! और प्यार से समझा रहे हैं, अरे भई तू कब तक सोयी रहेगी ? बात तो सही है। अब तो दिन चढ़ा है। अगर अब भी नहीं जागेगी तो कब जागेगी ?

तैं बौरी बौरापन कीन्हा, भर जोबन पिया आप न चीन्हा।
जागो, देखो पिया सेज न तेरे, तोहे छांड़ उठ गयो सबेरे॥

कहते हैं, उठ जाग, होश कर, तेरा पति कहां है ? और तू कहां लम्पट हो रही है ? कहते हैं वह सुबह का वक्त था तू सोई रही, वह चले गये। Morning hours, सुबह के वक्त, ब्रह्म महूरत जिसे कहते हैं तू तो सोई रही। गुरु नानक साहब ने एक जगह फर्माया है-

धन सूती पिर सद जागन्ता ।

यह रूह रूपी स्त्री सो रही है। क्या ? पति जाग रहा है, उसको पता ही नहीं कि पति मेरी सेज पर है भी कि नहीं ! आत्मा परमात्मा के आधार पर चल रही है। आत्मा की आत्मा परमात्मा है। हमारे हमेशा ही संग साथ है।

एका संगत इकत गृह बस्ते, मिल बात न करते भाई ।

एक ही संगत में रह रहे हैं और एक ही घर में रह रहे हैं। यह जिसम में आत्मा और परमात्मा दोनों भाई, मगर एक दूसरे का पता ही नहीं कि हैं भी कि नहीं। आत्मा मन-इन्द्रियों के घाट पर बाहरमुखी फैल रहा है और प्रभु है अन्तर, मगर उसका पता ही नहीं। कहते हैं कितने अफसोस की बात है !

दिला ताकै दरीं खाके मज़ाजी । चुनीं हम चू तिफ़लां खाकबाजी ॥

ऐ दिल तू कब तक इस दुनिया में मिट्टी और खेह उड़ाता रहेगा। आखिर यह जिसम छोड़ना है ! भई मनुष्य जीवन भागो से मिला है। इसमें हम जाग सकते हैं, इससे पूरा फायदा उठा सकते हैं। अगर यह भी हैवानों की तरह गुजार दिया तो ! आप देखिये हैवानों और इन्सानों में फर्क क्या है ? हैवानों के बाल बच्चे हैं, इन्सानों के भी बाल-बच्चे हैं। उनमें मोह माया है, इनमें भी है। उन में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार है, इन में भी है। तो फर्क क्या है भई ? वह दुख सुख मैहसूस करते हैं, यह भी करते हैं। वह गर्मी सर्दी महसूस करते हैं, यह भी करते हैं। इसमें अगर कोई फजीलत (बड़ाई) थी तो यही। देखा आप सब भाई इकट्ठे बैठे हो, हैवान मिल कर बैठ सकते है ? इसको विवेक बुद्धि मिली थी, आकाश तत्व प्रबल था, उससे यह सत्य और असत्य का निर्णय करके सत्य को ग्रहण कर सकता है और असत्य से मुंह मोड़ सकता है। अगर यह काम मनुष्य जीवन पा कर नहीं किया तो जन्म बर्बाद चला गया।

तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं अरे भई तू बौरी, बौरापन में जीवन गुजार दिया। समझे! इसी में गुजारते गुजारते तूने अपने प्रभु को चीन्हा नहीं। तू जाग, देख तो सही तेरा पिया कहां है ! तू सोई रही, वह सुबह आये और चले गये। समझे ! याद रखो, जिन की रातें बिगड़ गई वह बिगड़ गए। जिनकी रातें संवर गई, वह संवर गये। अन्धेरे पड़ने से, दिन चढ़ने तक जो समय है ना, जिसने इस वक्त को अपने काबू में कर के इससे पूरा फायदा उठा लिया, वह तो कामयाब हो गया। दिन को सब काम-काज में लग जाते हैं। अन्धेरा पड़े से दिन चढ़े तक ही का समय है, ख्वाहे सो कर गुजारी ख्वाहे विषय-विकारों में गुजारो या सुसायटी में मिल कर, Dances और यह वह में गुजार दो। बस। बारह-बारर, एक - एक बजे तक सुसायटी है,

हला-हला मच रही है। आये, एक दो बजे सोये, सुबह आठ बजे दिन चढ़े आँख खुली। एक आदमी से पूछा क्यों भई कभी आपने Rising sun देखा है, सूरज चढ़ते हुये ? कहते है सूरज चढ़ते हुये तो कभी नहीं देखा, हां सूरज डूबते हुये देखा है कई बार! यह हालत में जा रहे हैं। न रात का जागना रहा, न सुबह का ख्याल आया, ख्वाबे खरगोश में चले गये। ग्यारह बारह बजे तक दुनिया के धन्धों में रहे फलाना यह करना है फलाना यह करना है। यह विषय-विकारों में लम्पटताई में गुजर गया। रातें बिगाड़ दी। बस। यह सोई रही, वह परमात्मा, रौ आई, उससे खाली रह गई।

रात कथूरी बन्ड़िये,

रात को कस्तूरी बांटी जाती है भई -

जिनहां नैन निदरावले

जिनकी आँखों में नींद है उनको क्या पता किस भाव आई और किस भाव बिक गई। कब भाव का पता लगे ?

अमृत बेले सच नांव बडियाई बीचार।

अमृत वेले उठो भई, सच्चे नाम को सलाहो। समझे! यह मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा लाहा है। हम रातें तो देर से, एक दो बजे सोयेंगे सुबह दो तीन चार बजे कोई नहीं उठता। फिर! चीज बांटी जाती है, वह खाली रह जाते हैं। यही बात है और क्या ? कहते हैं अरे भई तू जाग तो सही तेरा पिया कहां है ? तेरी आत्मा की आत्मा है और फिर तुझे नजर नहीं आ रहा है, तेरी सेज खाली पड़ी है। दिन चढ़ा तो होश कहां रही ? फैलाव में आ गये। दिन चढ़े उठे हो,यह काम करना, वह काम करना, अपने आपके लिये कुछ वक्त कोई भी समय नहीं मिला जिसमें तुम उसके साथ Contact कर सकते थे, जुड़ सकते थे। वह वक्त गुजर गया। बड़े दर्द भरे लफ्ज हैं।

जाग देख पिया सेज न तेरे, तोहे छोड़ उठ गये सबेरे।
कहें कबीर सोई धन जागे, सबद बाण उर अन्तर लागे ॥

कहते हैं, इस सोई हुई हालत से कौन जाग सकता है ? जिसके अन्तर शब्द का बाण लगा है। शब्द किसको कहते हैं ? शब्द दो किस्म का है, एक बाहरी शब्द एक अन्तरी शब्द कहो। एक शब्द यह गाना-बजाना, बोलना-चालना, यह सब शब्द है। यह शब्द तुमको बाहर दुनिया में, फैलाव में फैलाता है ।

एक सबद गुरुदेव का ।

एक और शब्द है, जो गुरुदेव द्वारे मिलता है -

गगन में बात होती अति झीनी । कोई सुने रे ब्रह्मज्ञानी ॥

वह बात गगन में हो रही है। हर वक्त हो रहा है शबद, वह गुरुदेव द्वारे मिलता है। कब ? जब आप इन्द्रियों के घाट से ऊपर आओ। नीचे नहीं। वह (शब्द) वह ताकत है जिसके आधार पर सब दुनिया चल रही है ।

उत्पति प्रलय सबदे होवे, सबदे ही फिर ओपत होवे ।

जिसके आधार पर उत्पति और प्रलय हो रही है। और दुबारा सृष्टि का आगाज (शुरुआत) जिसके आधार पर होता है उस ताकत का नाम शब्द है ।

फिर फर्माया है -

सबद धरती, सबद आकाश, सबदो सबद भया परगास ।
सगली सृष्टि सबद के पीछे, नानक सबद घटो घट आछे ॥

सारी सृष्टि उस शब्द के पीछे बनी, उसका Link कहां मिलता है ? कहते हैं घट-घट में है ।

नौ दर ठाके धावत रहाये, दसवें निज घर बासा पाय ।

इस जिसम के दस द्वारे हैं, नौ तो प्रकट हैं, दो आँखों के, दो नासिका, दो कान, मुहं, गुदा और इन्द्री। और दसवां इस में गुप्त है ।

अन्धे दर को खबर न पाई ।

उस दर का हमें पता नहीं है। ऐ अन्धे इन्सान, उस दर का तुझे पता नहीं। उसका इशारा ऋषियों, मुनियों, महात्माओं ने दिया है, दो भ्रुमध्य नासिका का अग्र भाग। वह दरवाजा तुम्हारे निज घर को जाने का है । फिर क्या कहते हैं ?

उथै अनहद सबद बजे दिन राती ।

जब आप नौ दरों से ऊपर आवोगे, वहाँ अनहद ध्वनि हो रह रही है। कैसे सुनाई देती है? वह अब भी हो रही है, मगर-

गुरमत्ति सबद सुणांवणियां ।

जब तक गुरु की मति न मिले, है अब भी मगर सुनाई नहीं देती। जिसको मिल जाती है, वह चौबीस घन्टे सुनता है। तो फर्मा रहे हैं बड़े प्यार से कि जिस के अन्तर वह, शब्द का बांण लगा है, मन उस शब्द के महारस को पाकर इन्द्रियों के भोगों-रसों को भूल गया। जब यह इधर से हटे तभी यह इन्द्रजाल छूटेगा ? और कौन सा उपाय है ? तो इस सारी सोई हुई हालत से जागने का उपाय उस शब्द पावर के साथ लगने से है जो घट-घट में हो रही है। है

आपके अन्तर। कोई हृदय उससे खाली नहीं। उसके आधार पर सारी सृष्टि चल रही है। जब तक यह अन्तर्मुख उस से नहीं जुड़ता तब तक इसको न शान्ति है न टिकाव है, न रस, आना-जाना खत्म नहीं होता है।

तो यह कबीर साहब का शब्द था। थोड़े से लफ्जों में बड़े प्यार से समझाया है, अरे भई तू जन्मों-जन्मों से भूल में जा रही है। जाग! तू क्यों सो रही है। जागने का वक्त मनुष्य जीवन ही है जो तुझे आज मिला हुआ है। अब देर तक जो तेरा पिछला वक्त गया, वह गुजर गया, बर्बाद हो गया। अब तो जाग! जाग कर क्या देखा ? तेरा पिया कहां, तेरी आत्मा का पति परमात्मा कहां है ? तू सोई रही मन-इन्द्रियों के घाट पर, होश नहीं आई, जन्म बर्बाद कर गई। सब महात्माओं का यही उपदेश रहा है। वहां कौमों, मज़हबों, समाजों का सवाल नहीं, न मुल्कों का सवाल है। अरे भई किसी समाज में हो, तुम आत्मा देहधारी हो। तुम्हें यही बीमारी लग रही है जिसका जिकर हुआ है। किसी समाज में रह कर कर लो। किसी समाज में रहना बरकत है। उसमें रहकर इन्सान सदाचारी, नेक-पाक बने, मगर जब तक यह अपनी सोई हुई हालत से जागता नहीं, जन्म निश्फल चला गया, ख्वाहे वह किसी समाज का हो। किसी समाज में रह कर अगर आपने इस हकीकत को पा लिया, जन्म सफल हो गया। तो यह कबीर साहब का शब्द था जो आपके सामने रखा गया। अब एक शब्द स्वामीजी महाराज का आपके सामने रखा जाता है। पिछली दफ़ा हमने गुरु वाणी ली थी अब के स्वामीजी की बाणी आ रही है। गौर से सुनिये, वह क्या फ़र्मा रहे हैं।

छोड़ो यह सुख दुख का धाम । लगो तुम चढ़कर अब सतनाम ॥

स्वामीजी महाराज फर्माते हैं कि ऐ मन तू इस दुख और सुख के धाम को छोड़ दे। सुख और दुख का धाम कौन है ? यह जिसम इन्द्रियों का घाट, कहते हैं यह हमेशा कभी सुखी होवोगे, कभी दुखी होवेगे। तुम्हारी सूरत मन के आधीन है। ए मन तू इन्द्रियों के भोगों-रसों में लग रहा है। यहां कभी तू सुख प्रतीत करता है, कभी दुख प्रतीत करता है। जब किसी चीज से जुड़ बैठता है, उतनी देर तू सुखी मालूम होता है। जब उस से उखड़ता है तू दुखी हो जाता है। इसलिये अगर तू दुखों सुखों से ऊपर आना चाहता है तो क्या कर ? इस धाम ही को छोड़ दे, पिण्ड से ऊपर आ। जो इस जिसम में कैद रहे, वह हमेशा की जिन्दगी से खाली हो गये। Whosoever shall save this life shall lose it. कहते हैं कि जिसने इस जिसम की जिन्दगी को संभाले रखा है, वह हमेशा की जिंदगी को खो बैठा। And whosoever shall lose this life shall save it. और जिसम-जिसमानियत की जिन्दगी से जो ऊपर आ गया, कहते हैं वह हमेशा की जिन्दगी को पा गया। वह जिन्दा

जावेद हस्ती बन गई। उसका न आना है न जाना । हमारा इस दुनिया में आना-जाना कहां से होता है ? जब तक हम इस जिसम में, इन्द्रियों के भोगों-रसों में लम्पट हो रहे हैं, बाहर दुनिया में, हम दुनियां का रूप बन रहे हैं। कहां जायेंगे ?

जहां आसा तहां बासा ।

बार-बार यहीं आयेंगे। तो इस वास्ते पहिले ही ए मन, तू इस दुख सुख के धाम को छोड़ दे। क्या कर ? ''लगो तुम चढ़ कर अब सत नाम'' । चढ़ने का जिकर किया। इस वक्त यह कहां ? इन्द्रियों के घाट पर नीचे जा रहा है। जितनी इन्द्रियां हैं इसको नीचे गिरा रही हैं। पांच कर्म इन्द्रियां पांच ज्ञान इन्द्रियां । कहते हैं जहां तक यह इन्द्रियां हैं ना, स्थूल, यह तो सब सुख दुख का धाम हैं, इससे ऊपर चढ़ो। छोड़ो इन्द्रियों का घाट। क्या करो ? कहते हैं उस नाम से लगो जो हमेशा सत्य है। ऐसा नाम जो हमेशा सत्य है, लाफ़ानी है। इससे यह भी मालूम होता है कि नाम ऐसे भी हैं जो सत्य नहीं है। दो किसम के नाम हैं, एक अक्षरी नाम, समझे, जो अक्षरों द्वारा उच्चारण किये जाते हैं, जितने नाम हैं जो बयान हो सकते हैं, वह सब वरणात्मक हैं । वह जाते-हक़, जिसको यह अक्षरी नाम बोध कराने वाले हैं, वह असत्य नाम हैं। वह प्रभु Unchangable parmanence हैं, लातग़य्यर, लातबद्दल (अनिवार्य) रहती है। वहां न प्रलय पहुंचती है न महाप्रलय पहुँचती है ।

नाम के धारे खण्ड ब्रह्मण्ड

उससे सारे ब्रह्मण्ड धारे गये। उस Power का नाम, नाम है। समझे !

''एक नाम जुग चार उधारे।'' एक नाम से चारों जुगों में जीवों की कल्याण हुई। उसी नाम से जो सतनाम है अटल और लाफ़ानी है।

हर हर ऊत्तम नाम है, जिन सिरजयां सब को।

हरि का नाम बड़ा उत्तम है भई, जिसने सारी सृष्टि को सरजा (रचा) है। बड़ा साफ़ कर दिया ताकि भुलेखा (भूल) न रहे। अरे भई बाहरी अक्षरी नामों के लिये हमारे दिल में प्यार है। कहते हैं -

बलिहारी जाऊं जेते तेरे नावं हैं।

गुरु साहब कहते हैं भई जितने नाम भी ऋषियों, मुनियों, महात्माओं ने उसके बोध कराने के लिये बरते हैं, हम सब पर कुर्बान हैं। सब हमें प्यारे हैं। दसवें गुरु साहब ने कोई बारह चौदह सौ नाम दिये हैं जाप साहब में जो कहीं भी वेदों शास्त्रों में नहीं आये। तो भाई जो भी महापुरुष ने नाम रखा बहुत अच्छा है हमारे लिये, मगर इन नामों से चढ़ना है ऊपर, जिस को यह बोध करा रहे हैं, उस के साथ लगना है ।

नानक नावें के सब किछ बस है, पूरे भाग कोई पाय।

ऐ नानक ! नाम वह ताकत हैं जो Controlling power है, उस Controlling power के साथ लगना बड़े भागो से है। पूर्ण भाग जागें तब उससे लगे। बाहरी अक्षरी नामों से तो कोई भाई भी लग सकता है। ग्रन्थ पोथियां भरी पड़ी हैं। मगर जिस को यह अक्षरी नाम बोध करा रहे हैं, उसके साथ लगना मालिक की दया हो, पूरे भाग जागें तब होता है। फिर यह कहा -

धुर कर्म पाया तुध जिन को, से नाम हर के लागे ।

कि हे मालिक ! जिसको तू आप, धुर से आप दया करे, वह इस नाम के साथ लगता है। कहते हैं, क्या मिलता है ? फर्माते हैं -

कहो नानक तैं सुख होवा, तित घर अनहद वाजै ।

कि उस के मिलने से सुख और शान्ति मिलती है। निशानी क्या है ? कि अनहद की ध्वनि जागती है। सब महापुरुषों ने इसी का जिकर किया । परमात्मा क्या है । वह तो अनाम है भई ।

नमस्तंग अनामंग

हमारी नमस्कार है उसको, जिसका कोई नाम नहीं। नाम तो हम लोगों ने रखे ना ! वह अनाम ताकत जब Into being हस्ती में आई, नाम कहलाई। नाम के आगे अनेकों नाम ऋषियों मुनियों महात्माओं ने उसके समझाने बुझाने के लिये बरते हैं। हमारे दिल में सब के लिये इज्जत है। तो कहते हैं 'लगो तुम चढ़कर अब सतनाम।' वह सतनाम जो है, नाम की भी आगे Stages है, दर्जे बदर्जे, सब से नीचे, दरमियानी और आखरी, वह जो भण्डार है। वह कहां पर है ? कहते हैं कि तीन लोकों में तो है नहीं,चौथे में नाम का खजाना है। वहां पहुंचो। इस वक्त कहाँ है ? हम पिण्ड का रूप बने बैठे हैं, विषयों का, यह सुख-दुख का धाम है। इसमें जब तक लगे रहेंगे,कभी मरेंगे कभी पैदा होंगे। बार-बार दुनियां के रसों-कसों में लम्पट रहे, मर कर कहाँ जायेंगे ? जहां की आशा है। कहते हैं इसको छोड़ना सीख जाओ, पहिले दिन पिण्ड से ऊपर आना सीखो। सन्तों की तालीम कहां शुरु होती है ? Where the world's philosophies end there religion starts. जहां दुनिया के फ़िलसफे खत्म हो जाते हैं, वहां परमार्थ की क, ख, शुरू होती है। पिन्ड से ऊपर चलो। ऊपर, अब इन्द्रियों का जितना ज्ञान है, यह दृश्य का ज्ञान है। वह अदृष्ट है। सन्तों की तालीम अदृष्ट से शुरु होती है। यह एक Practical (करनी का) मजमून है। जब तक पिन्ड से ऊपर न आवो, उस की सूझत ही नहीं आती। सारा जहान कहता है। नाम जपो, नाम जपो । ठीक है। हम अक्षरी नामों का तो उच्चारण करते रहते हैं मगर नाम की जो तारीफ़ सन्तों ने दी है उस को अभी नहीं पाया। वह कहते हैं -

नाम जपत कोटि सूर उजियारा ।

नाम जपते हुए करोड़ों सूरजों का प्रकाश होता है। भई कभी हुआ है ? अगर नहीं हुआ तो इसका यह मतलब है कि हमें अभी नाम नहीं मिला है। हम अभी अक्षरी नामों में हैं। उस में प्रणव की ध्वनि हो रही है, आकाश, बाणी, नाद हो रहा है।

तेरे द्वारे धुन सहज की माथे मेरे जगाई ।

हे प्रभु तेरे दर पर सहज की ध्वनि हो रही है, मेरे माथे पर प्रगट हुई है। नीचे चक्रों में नहीं, आज्ञा चक्र से ऊपर चलो, तब। यही पातान्जली जी ने ज़िकर किया है कि योगी जब नीचे चक्रों को तै करके जब आज्ञा चक्र पर आता है तो वहां अनहद शब्द को पकड़ कर चक्र पर आता है तो वहाँ अनहद शब्द को पकड़ कर सहस्त्रार में लीन होता है। इशारा दे दिया, पिण्ड से ऊपर आओ। जहां जहां तक महापुरुष पहुंचे वहां का जिकर करते गये। हम जो पिण्ड में बैठे हैं, हमारे दिल में तो सब के लिये इज्जत है भई । Comparative talk में दर्जे-बदर्जे इन्सान बयान करता है, यह अनहद शब्द है, फिर सार शब्द है। फिर सत शब्द है, दर्जे बदर्जे चलो। अगर पिण्ड से ऊपर नहीं आये, उधर दखल हो नहीं तो क्या कर सकता है इन्सान? तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि ऐ इन्सान ! तू सुख और दुख के धाम को छोड़ दे । चलो पिन्ड से ऊपर ।

एहा भगत जन जीवत मरे । गुरु परसादी भवजल तरे ॥

भक्ति इसी का नाम है कि इन्सान जीते जी पिन्ड को छोड़ना सीख जाये। यह सुख और दुख के धाम को छोड़ना सीख जाये। यह कैसे होगा ? कहते हैं गुरु कृपा से होगा, अगर ऐसा कर सकोगे तो भवजल, संसार से तर जाओगे। जब आप पिन्ड से ऊपर आना सीख गये, अन्तर नाम के महारस को पा गये। ऊपर के रस ज्यादा Attractive (कशिश वाले) हो गये, इन्द्रियों के भोग-रस फीके पड़ गये, फिर तुम दुनिया में क्यों आवोगे ? आप देखेंगे कितनी खूबसूरती से बयान कर रहे हैं, ''तजो मन यह दुख सुख का धाम, लगो अब चढ़ कर सतनाम'' नाम से लगो, तुम्हारी कल्याण होगी। यहां यह देखिये किन को उपदेश है ? As a man problem है (सबके लिये यह पहेली है) हम सब दुख सुख के धाम में कैद हैं, जिसम का रूप बने बैठे हैं बाहर इससे इन्द्रियों के घाट से, जो सम्बन्ध रखते हैं वह साधन सब कर रहे हैं। करते करते, मन जागा नहीं। समझे। एक और जगह स्वामी महाराज ने बड़ी खूबसूरती से बयान किया कि यह मन सोया हुआ कैसे जाग सकता है ? अरे भई जब तक तुम उन कर्मों धर्मों में लगे हो, इन का ताल्लुक इन्द्रियों के घाट से है। उससे तैयारी का काम ले लो,मगर मन सोया हुआ कभी नहीं जाग सकता जब तक पिण्ड से ऊपर न आये इन्द्रियों का घाट छोड़े नहीं, अन्तर नाम या शब्द के रस को पाये नहीं, यह सोई हुई हालत से जाग

नहीं सकता है। यह सो रहा है, इन्द्रियों के भोगों रसों में। तो आत्मा इसके साथ है, वह भी सो रही है। पहिले मन को इन्द्रियों के घाट से हटाओ, फिर आत्मा को मन से छुड़ाओ, तब अपने आपको होश आये कि मैं कौन हूं, और प्रभु के जानने के काबिल हो। यही बीमारी है जो सबको लग रही है। यह Subjective side (अन्तरी पहलू) Obective side (बाहरी पहलू या रहनी) अपनी अपनी है, हर एक की। जहां हो रहो। Man is social इन्सान मिल जुलकर रहने वाला है, इसको social body (समाज) चाहिये नहीं तो और बनायेगा। इसलिये सन्त महात्मा, जितना सामाजिक जीवन है उसको नहीं छेड़ते। वह कहते हैं जहां हो, मुबारक हो। रहो। तुम आत्मा हो। तुम्हारी आत्मा मन इन्द्रियों के घाट पर अपने आप को भूल चुकी है। प्रभु को भूल चुकी है। अपने आपको होश में लाओ और उसे प्रभु से जुड़ो। यह उपदेश है, हमेशा से रहा है, हमेशा रहेगा। जो महापुरुष आये, जिन्होंने इस हकीकत को पाया, जो जो उनसे मिलते रहे उन उनको वह जगाते रहे। जब वह चले गये, हम फिर भूल में पड़ गये। कोई और महापुरुष आकर उसको ताजा करते रहे। बस। बात तो इतनी है। तो हमारे दिल में सब महापुरुषों के लिये इज्जत है, जो पीछे आये, जो अब भी है। जो आगे आयेंगे उनके लिये भी इज्जत है। तो कहते हैं, ए मन, तू सुख दुख के धाम को छोड़ दे। सत नाम के साथ लग जो अटल और लाफ़ानी, अविनाशी है ।

कृतम नाम जपे तेरी जिहवा । सतनाम तेरा परा पुरबला ॥

यह जितने नाम और है, वह कृतम हैं, बनाये हुये हैं, लोगों के रखे रखाये हैं। हे प्रभु! तेरा नाम तो सत्य है, अटल और लाफ़ानी है। तू वह हस्ती है जो कभी गिरायमान नहीं है।

तजो मन यह दुख सुख का धाम। लगो तुम चढ़ कर अब सतनाम ॥

दिना चार तन संग बसेरा, फिर छूटे यह ग्राम ।

कहते हैं, तन के साथ तेरा बसेरा चन्द दिनों का है, हमेशा रहने का नहीं। एक दिन आयेगा जिस दिन तुम को इसको छोड़ना पड़ेगा। पैदा होते हुये पहिला साथी हमारे साथ कौन है ? यह शरीर या तन। पैदा होते हुये, पैदा होने से पहिले, हमारे साथ आता है, मगर जाते हुए हमारे साथ नहीं जाता। फिर! बताओ वह सामान जो इस जिसम करके बने हैं वह कैसे जायेंगे ? यहीं रह जायेंगे कि नहीं ? यही बात एक सोचने की है। ऐ मन, तू इन्द्रियों के घाट पर, इस तन में जो सुख और दुख का धाम है, इसमें फंस रहा है। यही तेरा दीन ईमान बना पड़ा है। तू समझता है बस यही है ।

एह जग मिट्ठा आगे किने डिट्ठा ।

तू इसी में लम्पट, मस्त हो रहा है। अरे भई, इसमें तू कभी दुखी है, कभी सुखी है। तू ऐसी अवस्था को पा जहां न दुख रहे न सुख रहे, ऐसी अवस्था को पा जाओ, फिर एक-रस

मिलेगी हालत, यहां भी लड्डू, मरकर भी लड्डू । यह किस को होगा ? तृप्ति किस को आती है ? इस अवस्था को कौन पा सकता है ? देखिये, कच्चा अखरोट हो, उसमें सुई मारो तो आर-पार हो जाता है, गिरी छिलके से अलेहदा हो जाती है। अव्वल तो सूई अन्तर जाती नहीं, जाये भी तो गिरी अलेहदा है। अरे भई जीते जी जो पिण्ड से ऊपर आना सीख गया, अन्तर उस को एक ऊँचा रस मिल गया,बाहर के दुख सुख यह नहीं कि नहीं आयेंगे उनको, आते तो हैं जरूर, मगर उन्हें Pinching effect नहीं रहता, असर नहीं करते हैं। उनके पैदा भी होते हैं, मरते भी हैं, मुआफ करना। गरीबी भी आती है, अमीरी भी आती है। हो सकता है खाने को भी न हो। हो सकता है जूते-गांठ कर गुजारा करना हो। रविदास जी चमार थे। समझे। जूते गांठ कर गुजारा करते थे। कबीर साहब को कई बार घर को खाना नहीं होता था। मगर गुरु अर्जुन साहब क्या कहते हैं ?

बस्ता टुट्टी झोंपड़ी चीर सब छिन्ना ।

टुट्टी हुई झोपड़ी हो कपड़े फटे हुये हों, न कोई साक हो, न सम्बन्धी हो, जंगल में बास हो, रहने को कोई जगह न हो, कहते हैं -

राजा सगली सृष्टि का नाम रस भिन्ना ॥

जिस के अन्तर नाम का रस है, वह सृष्टि का राजा है। समझे। तो तृप्त हो जाता है, उपराम हो जाता है। उसमें तृप्ति, रज्ज पैदा होती है। वह कौन सी चीज़ है जिस को पाने से सब कुछ पाया हुआ सा हो जाता है ? यही चीज है। जब उस को पा गये, तृप्ति आ गई, दुनियां में रहे गरीबी में रहे, उस के अन्तर शुकराना है, टिकाव है। नहीं तो दुनियां मारी-मारी फिर रही है सुख दुख के धाम में। कहते हैं भई जिसम के साथ तुम्हारा बसेरा चन्द रोज़ का है। तुम इस मकान के मकीन हो। आखर एक दिन खाली करना होगा। कब करना है, यह भी पता नहीं। जब Eviction order (जाने का पर्वाना) प्रभु की दरगाह से चिट्टी फट जायेगी ना, खाली करना होगा, देखो बड़े बड़े ऋषि, मुनि,महात्मा आये, वली औतार आये, पूर्ण पुरुष आये, जिसम लिया और छोड़ गये, जब वह छोड़ गये तो हमने भी छोड़ना है। No exception to the rule. हां वह इस जिसम में रह कर इस जिसम में पूर्ण फ़ायदा उठा गये, ऐसी जिन्दगी को पा गये जो हमेशा की जिन्दगी थी। आना-जाना खत्म हो गया। जो उन के साथ लगे उन का भी जीवन सफल हो गया। इसलिये हमारे दिल में उन महापुरुषों की कदर है। इसलिये जहां जहां वह रहे। वह हमारे लिये वह जगहें तीर्थस्थान हैं। समझे ! इसलिये जहां जहां उन्होंने पांव रखे वह भी काबिले इज्जत जगह हैं। एक महात्मा आये, दस जगह रहे, दस तीर्थ बन गये। हजरत मुहम्मद साहब मक्के-मदीने आये, वह सब मुसलमानों का तीर्थ है। ईसा मसीह साहब यरोश्लम में आये, वह सारी ईसाई दुनिया का तीर्थ है। गुरु नानक साहब जहां पैदा हुये, वह ननकाना साहब बन गया। जहां वली कन्धारी

से बात-चीत हुई, वह पन्जा साहब बन गया। रेठे के नीचे बैठे, रेठा साहब बन गया। तो मेरे अर्ज़ करने का मतलब है कि एक महात्मा कई जगह रहे सब तीर्थ बन गये, महात्मा बुद्ध जहां रहे, बौद्ध गया में रहे, वह बौद्धों का अब भी तीर्थ है। तो वह यादगारें हैं उन महापुरुषों की, जिन्होंने हकीकत को पाया है। अगर उस तालीम पर तुम चलोगे तो तुम्हारी भी कल्याण हो जायेगी और क्या। जिस ने बोध को पाया है, उस की सोहबत संगत अखत्यार करो, तब काम होगा। मनुष्य जीवन यह जिसम जो है ना, चार दिन का बसेरा है। आखर भाई खाली करना होगा ।

जिनी चल्लण जाणियां, सो क्यों करे बिथाह।

अगर तुम्हारे दिल में यह बात घर कर जायेगी कि यह जिसम एक दिन छोड़ना है, तो इतने झूठ के पसारे, गले काटने, हाय-हाय, क्यों करें ? इन्सान, अकलमन्द इन्सान,कौन है ?

दे लम्मी नदर निहारिये ।

जो Foresight (दूरदर्शिता) से काम लेता है, अरे भई इस का हशर (परिणाम) क्या होना है, उसके लिये फिर तैयारी करता है। जाना है सबने क्या हम इसके वास्ते तैयार हैं ?

लाहौर का वाकिया है। एक गांव में एक अच्छे जन्टेलमैन का जवान लड़का गुज़र गया। उसको शमशान भूमि में ले गये। दो चार सौ आदमी थे। अच्छी Gentry (भद्र पुरुषों की सभा) थी। तो मुझे कहने लगे आप कुछ उपदेश दो इस वक्त। आम यह कायदा है। आजकल नया रिवाज है। मैंने कहा भई उपदेश का मज़मून तो आपके सामने पड़ा है। यह तुम्हारे जैसा बुत है, जो तुम लिये फिर रहे हो, और इस से कोई चीज निकल गई है। इस के चलाने वाली निकल गई है। तुम में है, क्या तुम इस तबदीली के लिये तैयार हो ? Are you prepared for this change ? हो तो मुबारिक ! नहीं, तो यही मज़मून तुम्हारे लिये भी है। सबसे बढ़ कर यही उपदेश है। आखर भई जिसम को छोड़ना है। कोई हौव्वे की बात नहीं। It is no bug bear मौत कोई हवा नहीं। मगर जब तक इस Mystery of life जिन्दगी के मुईमे को हल न कर ले, शान्ति कैसे हो सकती है ? गुरु अर्जुन साहब ने फ़र्माया -

जे कोई जन्म मरण ते डरे । साध जनां की सरण पड़े ॥

जिन को जन्म मरण का खौफ है, वह साधुओं के चरणों में जायें । उनके पास कौन सा मज़मून हैं ? भई क, ख, उनकी यह है कि, ''छोड़ों यह दुख सुख का धाम ।'' पिण्ड के ऊपर आकर उन की क, ख शुरु होती है पहिले दिन ही, अगर रोज-रोज के करने वाला हो जाये ।

गुरुमुख आवे जाय निशंक ।

उसको मौत का क्या खौफ है ? हम तो मौत के नाम से डरे हैं ना !

जिस मरने ते जग डरे मेरे मन आनन्द ।

दुनिया तो डर रही है कबीर साहब कहते हैं -

जिस मरने ते जग डरे मेरे मन आनन्द ।
मरने ही ते पाईये पूर्ण परमानन्द ॥

हमेशा के सुख में वासिल, लीन, हो जाता है जिस्म को जब छोड़ता है। यही गुरु अमरदासजी ने फर्माया -

मरने ते सब जग डरे जीविया लोड़े सब कोय ।

मरने से सारा जहान भयभीत हो रहा है। हर एक कहता है मैं दो सांस और ले लूं! क्यों कि इससे परे का पता ही नहीं पिन्ड कैसे छोड़ते हैं। मरना नहीं आया। अगर मरने का ढंग आ जाये, रोज निकलना सीख जाये जिस्म से, उसको मौत का क्या खौफ है ? एक आदमी विलायत में फिर आया दो बार, दस बार। उससे कहो तुम्हारी तबदीली विलायत होगी, बहुत अच्छा जी ! वह कई बार गया है। अगर पिण्ड को छोड़ना आ जाये, मौत का खौफ न रहे । और Beyond जिस्म से परे का जो तजुरबा है उसका अभी जीते जी तजुरबा होने लगे। तो फिर खुशी खुशी जाता है। बात तो इतनी है ।

मरने ते सब जग डरे जीवया लोड़े सब को।
गुरु परसादी जीवत मरे तां हुक्मे बूझे को॥

अगर किसी अनुभवी पुरुष की कृपा से जीते जी पिन्ड से ऊपर आने के राज़ (भेद) को जान जाये तो उस मालिक के हुक्म को बूझने वाला Conscious co-worker बन जाता है। वह देखता है-

मेरा किया कुछ न हो । जो हर भावे सो हो ॥

वह देखने वाला हो जाता है ।

नानक ऐसी मरनी जो मरे तां सदजीवन हो ।

अगर ऐसा मरना भाई तुम सीख जाओ तो हमेशा के जीवन को पा जाओ। अरे भई यह जिस्म छोड़ना है। सबने छोड़ा है ।

आं तुई के वे बदन दारी बदन । पस मतसद जिस्मो जां बेरुंशुदन ॥

अरे भाई तू वह है जिसका इस जिस्म के बगैर एक और जिस्म भी है। इससे निकलने के लिये तू डर क्यों रहा है ? कितने लोग हैं जो तैयार हैं निकलने को, मुआफ करना। जिनको

कोई अनुभवी पुरुष मिला, पिन्ड से ऊपर आना सीखा, रोज-रोज अभ्यास से दिन में सौ-सौ बार, कबीर साहब कहते हैं, उसको मौत का क्या खौफ़ है ? आज आये कल आये, अब आये। तो कहते हैं, इस जिस्म के साथ भई तुम्हारा चन्द दिनों का बसेरा है। इसको छोड़कर ऊपर चलो, वह सत्य वस्तु जो है, उससे लग जाओ।

दिनां चार तन संग बसेरा फिर छुटे यह ग्राम ।
धन दारा सुत नाती कहियन यह नहीं आवें काम ॥

या तो इन्द्रियों के भोगों-रसों में लग रहा है, या स्त्री में, बाल बच्चों में, पोतों-दोहतों में लग रहा है, रुपये-पैसे, जायदादों में यह मन लग रहा है। कभी बनता है, कभी हार गया तो गम हो गया, जीत गया तो खुशी हो गई, फ़ायदा हो गया तो बहुत खुशी है, नुकसान हो गया तो टूटी हुई चारपाई ले कर पड़ जाता है। समझे! जायदादें आग लग गई, लाखों वाले खाक हो जाते हैं। कई लोग मर गये इसी दुख में । तो कहते हैं -

दारा सुत नाती कहियन यह नही आवें काम ॥

यह रुपये-पैसे, जायदादें, बाल बच्चे, दोस्त मित्र यह सब तुम्हें पिन्ड से ऊपर जाने में मददगार नहीं। यह उलटे तुमको दुनिया में फंसा रहे हैं। बाहर पिन्ड से ऊपर जाने का कोई मददगार नहीं क्योंकि वह खुद फंसे हैं ।

मुक्ते सेवे सो मुक्ता होय ।

किसी मुक्त पुरुष की सोहबत करोगे तब मुक्त होवोगे ना! जो खुद मन-इन्द्रियों के घाट पर बन्धा पड़ा है, उसमें तुम लम्पट हो रहे हो तो कहां जाओगे ? जहां वह जायेगा वहां तुम भी जाओगे। राजा प्रीक्षित का जिकर आता है कि उन के दरबार में एक पन्डित थे। वहां श्रीमद् भागवत के कई बार उन्होंने भोग सुने। उसमें यह लिखा है कि जो श्रीमद्भागवत के भोग सुन ले वह मुक्ति को पा जाता है। मन बड़ा मैजिस्ट्रेट है, बैठे हुए खुद ही फैसला दे देता है, तू अभी मुक्त नहीं हुआ। सो वह राज दर्बार के पण्डित को कहने लगे, भई देखो मैंने कई बार श्रीमद् भागवत का भोग सुना है मगर मैं मुक्त नहीं हुआ, अब के फिर सुनूंगा, अगर न मुक्त हुआ तो तुम को मार दिया जायेगा। कहने लगा बहुत अच्छा। 'हुकमे हाकिम मर्गे मफाजात'। सात दिन में भोग पड़ गया। सात स्कन्ध हैं, सात भूमिकायें हैं। राज़ (भेद) की बातें हैं। यह कोई आमिल (अनुभवी) पुरष जाने तो जाने, नहीं तो किस्सा और कहानियां है। पढ़ लिया भोग पड़ गया शाम को घर आये, लम्बे पड़ रहे। लड़की जवान थी, उसने पूछा पिता क्यों उदास हो ? कहने लगे बेटी कल मेरी मौत का दिन है। क्यों ? सारा किस्सा सुनाया । कहती है, अच्छा कल मैं जाऊंगी बादशाह के पास। सुबह वह गई। राजा ने पूछा, बेटी कैसे आई है ? कहने लगी राजन, मैं तुम्हारे सवाल का जवाब देने आई हूं, मगर यहां नहीं जंगल में चलो। जंगल में गये। पिता को भी मंगा लिया, दो रस्से भी मंगा लिये। एक को एक दरख्त के साथ बांध दिया दूसरे को दूसरे दरख्त के साथ बांध दिया । अपने पिता को कहने लगी, पिता

राजन को खोल दो ! कहने लगा, बेटी मैं बन्धा हुआ हूं मैं कैसे खोल सकता हूं ? राजा के पास गई, राजन ! मेरे पिता को खोल दो। कहने लगा नादान लड़की, कभी बांधा हुआ भी किसी बांधे हुये को खोल सकता है ? यही लड़की चाहती थी। कहने लगी, अगर बन्धा हुआ पुरुष बन्धे हुये को नहीं खोल सकता तो यह भोग भी किसी मुक्त पुरुष से सुनने थे, तुम को वह हकीकत का राज़ (भेद) दे जाता ।

यही बाणियां पढ़ लो, मुआफ करना पढ़ने से, जो खुद मन-इन्द्रियों के घाट पर हैं, वह तुम को यह Clarify clearcut करके चीज़ कभी नहीं पेश कर सकता है। और फिर पेश ही नहीं करेगा, पेश करके उस का तजरूबा (अनुभव) भी क़रायेगा। जिस ने खुद नहीं किया वह तुम्हे क्या देगा ? बेशक ग्रन्थ-पोथियां सुनते रहो, कबीर साहब ने कहा है -

गुरु बिन माला फेरत, गुरु बिन देते दान ।

लाख यह लम्बे चौड़े ज्ञान-ध्यान करो, True import, सही भेद नहीं मिलता जब तक कोई आमिल पुरुष न मिले। ग्रन्थ पोथियां हम पढ़ सकते हैं मगर उन का सही Import सही मायनों को नहीं समझ सकेंगे उस वक्त तक जब तक ग्रन्थ पोथियों में जिस मज़मून का ज़िकर है, उस का कोई आमिल पुरुष, कोई माहिर पुरुष न मिले। आलिम ने तो थोड़ा इलमियत के घाट पर आप को समझाना है। कई बातें ऐसी आती हैं जहां वह मुंह के बल गिर जाते हैं।

मैं लाहौर का जिकर करूं, मेरे एक सुपरिनटेन्डेन्ट थे नीचे, ईसाई। मैंने उस को समझाया कि भई घन्टे के यह ध्वनि है ना, मन्दिरों में भी हैं, गुरुद्वारों में भी है, जैन मत, बुद्ध मत के मन्दिरों में जाओ वहां भी है। पूजा पाठ के वक्त घन्टी बजाते हैं। अरे भाई ईसाईयों के गिरजे में नाक की लम्बूतरी के शकल के नीचे, वहां भी है। घन्टा बजता है। जा कर यहां के बिशप से पूछो कि यह घन्टा क्यों रखा हैं ? जब गये, पूछा, तो वह बिशप जो थे, वह कहने लगे, It is only to call men together. लोगों को इकट्ठा करने के लिये घन्टा बजाया जाता है। वह ईसाईयों में Most advanced (बड़ा विद्वान) गिना जाता था। मगर इलमियत के घाट पर और क्या कहेगा ? अरे भई मान लो कि वहां बुलाने के लिये हैं, तो मन्दिरों में जो जाते हैं खुद घन्टा बजाते हैं। पूजा पाठ में घन्टी बजाते हैं। यह तो Symbol (प्रतीक) है, अन्तर का प्रणव की ध्वनि जो घट-घट में हो रही है। उस का नमूना बाहर मन्दिरों की शक्ल में, गिरजों की शकल में है। जब तक आमिल (अनुभवी) लोग रहे इस हकीकत को पाते रहे, नहीं तो बाहर के बाहर रह गये। तो आलिमों से आप ग्रन्थ पोथियां सुनेंगे लेकिन उस का Right import नहीं समझ आयेगा जब तक किसी आमिल पुरुष से नहीं सुनोगे। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि यह जितने सामान हैं ना, बाहरी, जायदादें, रूपया-पैसा, बाल-बच्चे, इस काम में तुम्हारे मददगार नहीं,क्योंकि वह खुद बन्धे पड़े हैं। बन्धे हुये को बन्धा हुआ कैसे खोल सकता है ? तो मुक्त पुरुष जो हैं उनकी सोहबत संगत में हमें होश आ सकती है। Theory भी समझ आयेगी और Practically भी समझायेंगे, बिठा कर थोड़ा तजरुबा करायेंगे। उनकी हिदायत के मुताबिक रोज़-रोज़ काम करो तुम कामयाब हो जाओगे ।

स्वास दो धारा नित ही जारी। इक दिन खाली चाम ।

कहते हैं इस जिसम में दो धारा हैं, सांस चल रहा है, जाता है, आता है, जाता है, आता है। दम आता रहा तो आदमी नहीं तो नहीं । आखर जितने स्वासों की पून्जी है ना -

''लेखे सास ग्रास''

हर एक की आयु स्वासों के हिसाब से है। जितने स्वास लेने हैं, उतने जब खत्म होंगे जाना पड़ेगा। अब स्वासों का ठीक, जायज़ और नाज़ायज इस्तेमाल रहा Normal (आम) हालत में कोई मिनट में चौदह-पन्द्रह स्वास जाते हैं। अगर विषय विकारी जीवन हो, गुस्सा हो, क्रोध हो, काम हो, वेग अहंकार का हो तो स्वांस जल्दी चलता है। कोई एक मिनट में शायद पच्चीस छबीस स्वास जाते हैं। कहते हैं ना, पापों से उम्र घटती है, उसका मतलब यही है। अगर संयम का जीवन हो, अभ्यासी जीवन हो, तो एक मिनट में तीन-चार स्वास बड़े Slow rythmic स्वास जाते हैं। योग वालों ने, एक स्वास चढ़ाया, दो-दो साल तक वाला तो मुझे भी मिला। उन्नीस सौ इकीस में मुझे एक ऐसे भाई मिले जो दो साल तक स्वास चढ़ा के बैठा रहा ! उतनी आयु लम्बी होगी कि नहीं ? इतिहासों में ज़िकर आता है गुरु अर्जुन साहब ने जब सन्तोख सर का तालाब खुदवाया है तो उसमें एक योगी मिला जो जनक के समय का बैठा था। अन्दाजा लगाओ। तो योगी अगर स्वास चढ़ा कर बैठ जाये तो हजारों साल की आयु होगी की नहीं ? अब भी लामा है, दस-दस हजार साल के तो नीचे भी मिलते हैं तिब्बत में, ऊपर उस से भी बड़ी उम्र वाले हैं। स्वास चढ़ाया और बैठ गये, बस, उतनी आयु लम्बी होगी मगर आयु लम्बी करने का सवाल नहीं है। अगर मान लो हो भी जाये, जब तक हकीकत को न पाया तब तक शान्ति नहीं। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, भई दो धारा सांस की चल रही है। यह एक दिन खाली हो जायेगा ।

एक महात्मा के पास एक आदमी आया। कहने लगा, महाराज फलाना आदमी है,वह दम तोड़ रहा है, तो कहने लगे, कितनी आयु है उस की ? कहने लगा, सत्तर साल की है। कहने लगे, वह आज कहां तोड़ रहा है, वह सत्तर साल से तोड़ रहा है। अब तो आखरी दम हैं उसके। हर एक स्वास हमें उस आखरी तबदील की तरफ ला रहा है। बात तो यह है। यही बात जाननी थी जिस को न जान कर हम बड़ी भूल में जा रहे हैं। अगर हमें यह मालूम हो जाये, मुआफ करना,कि हमने रात को जाना है, बताओ आज दिन क्या काम करेंगे ? महात्मा कहते हैं भई तुम हर दिन इस तरह से गुज़ारो कि आज तुम्हारा आखरी दिन है दुनिया में। जो तुम आखरी दिन करोगे वह कर लो।

स्वास दो धारा नित ही जारी, एक दिन खाली चाम ।
मसक समान जान यह देही, बहती आठों जाम ॥

एक और मिसाल देते हैं, जैसे मश्क पानी की भरी हो, एक-एक कतरा बह रहा हो। चौबीस घन्टे कतरा-कतरा बहता रहता हो, आखर एक दिन खाली हो जायेगी। घड़ा भरा है, एक-एक कतरा बह रहा है, आखर एक दिन खाली हो जायेगा। स्वांसों की पून्जी जब

खत्म होगी तो जाना पड़ेगा। कई देखते हैं आप। Thy days are numbered क्राईस्ट ने कहा, तुम्हारे दिन गिने हुये हैं। अरे भई स्वास और ग्रास हिसाब में है। एक आदमी को दस गोलियाँ लगती हैं, वह नहीं मरता। देखा, तीस-तीस गोली लगे हुये नहीं मरे। पांव फिसलता है मर जाता फिर ! गुसलखाने में जाता हैं, वहीं दम तोड़ देता है। सोते सोते जागता ही नहीं,फिर! तो जब स्वांसों की पून्जी खत्म होती है, जाना पड़ता है। हर एक घन्टा, हर एक मिनट, हर एक स्वास हमें उस आखरी तबदीली के, जिस को हम मौत कहते हैं, उसके हमें नजदीक ला रहा है। तो जिन के अन्तर यह ख्याल प्रबल हो गया At home हो गया कि जाना है, वह इतने झूठ के पसारे, फरेब, धोखा, यह वह, नहीं करता। यह सब किस लिये करे! ''खावे कल्ला सीधे गल्ला।'' होश में आ जाओ। हम मौत को भूल चुके हैं। यही बड़ी गुमराही (भूल) का कारण है। जो इन्सान जहाँ बैठा है, उसी ज़ोम में खूब मारो-मार जा रहा है। पता नहीं कि मौत आनी है । आनी है, अवश्य आनी है, जरूर आनी है। किस को नहीं आई और किस को नहीं आयेगी ? कुछ चले गये। कहां हैं हमारे मां-बाप आज ?

फरीदा किते तेरे मां-पियो जिनी तू जणीयोई ।
ओह तैं पासों लद गये, तू अजे न पतीयोई ॥

तेरे देखते देखते तेरी आँखों के सामने चले गये, तुझे अभी भी यकीन नहीं कि तूने भी जाना है। एक फकीर था। एक शाही महल में जा बैठा। बादशाह वहां से गुजरे, कहने लगे,अरे भई यहां क्या कर रहा है ? कहने लगा, महाराज, यह सराय है। मैं आ कर बैठा हूं। बादशाह कहने लगा, अरे भई फकीर, तुम को यह अकल नहीं कि यह सराय है कि महल है? कहने लगा यह सराय है सराय। मैं सराय समझ कर आकर बैठा हूं। कहते हैं, देख बादशाह! तू यह बतला तुम से पहिले यहां कौन रहता था ? कहते हैं मेरा बाप । उससे पहिले ? मेरा दादा । उससे पहिले ? उसका बाप। कहने लगे फिर यह सराय नहीं तो और क्या है ? मकानों का क्या, यह जिसम भी छोड़ना पड़ेगा भई ।

काया सराय में जीव मुसाफिर, काहे करत उन्माद रे ।

कबीर साहब कहते हैं, काया रूपी सराय में यह जीव बस रहा है। अरे भई इसमें, इन्द्रियों के भोगों-रसों में, क्यों मस्त हो रहे हो ? यह तो छोड़ना है। सराय, में रात आये सुबह चले गये, बस। एक दिन नहीं, दो दिन रह गये। अगर तुम वहां पर कब्जा बिठाओगे, तो वह पकड़ कर जबरदस्ती निकाल देगा। सराय का मालिक जो हुआ ना भाई सराय का मालिक है, Negative power (काल) चन्द-रोज़ सिलसिला है। तुम भूल में जा रहे हो, ऐसा जादू फैला है कि हर एक आदमी अपनी-अपनी जगह मस्त है। शम्स तबरेज साहब ने एक जगह जिकर किया है कि-

आवारगी नविश्त शुदा, खाना फ़रामोश शुदा ।

कि हमारी किसमत में दर-बदरगी लिखी गई है,घर को भूल गये ।

आं गन्दा पीरे काबली, बस सहर करदा अज़ दग़ा ।

उस काबल के गन्दे पीर ने हमें ऐसा जादू कर के भुला रखा है, दंगे और फरेब में फंसा रखा है। हर कोई भूल में जा रहा है। इसके परे का ख्याल ही नहीं आता है कि इससे परे कुछ है भी कि नहीं! यह जग मीठा मालूम होता है कि यही सब कुछ है। सब शास्त्र कहते हैं, जगत असत है आत्मा सत है। सत किस को कहते हैं ? जो हमेशा रहने वाला है। मगर हम क्या मान रहे हैं कि यह जगत सत है,आत्मा का पता ही नहीं। झगड़ा पाक। बड़ी भूल में जा रहे हैं। हम सुख-दुख के धाम का रूप बने बैठे हैं। जिसम मैटर (स्थूल तत्वों) का बना हुआ है। इस का ज़र्रा-ज़र्रा (कण-कण) बदल रहा है। समझे। सारा जगत भी Matter का बना हुआ है, वह भी बदल रहा है। जब दो चीजें एक ही रफ़्तार से बदल रही हों, वह मालूम होती हैं खड़ी है। जैसे बेड़ी में तीन चार आदमी सवार हो कर दरिया में जा रहे हों जिस तरफ कि दरिया बहता है। एक आदमी उसमें बाहर खड़ा हो जाता है, बेड़ी से। वह देखता है बेड़ी भी बह रही है, पानी भी बह रहा है। उनको पुकारता है हमदर्दी से, अरे भाई तुम बह रहे हो। वह गिर्दा-गिर्द देखते हैं, पानी भी खड़ा है, हम भी खड़े हैं। अरे भई तू क्या कहता है ? भूल है कि नहीं ? जब अनुभवी पुरुष आपको मिलता है वह पहिले तुम को, पहिले ही दिन ऊपर लाता है। चलो ऊपर। थोड़ा तजरूबा, रुपये में पैसा दो पैसा भी करा दे, रोज अभ्यास से बढ़ाओ, यह जिस्म मिट्टी का ढेर है, इसके साथ सारा सिलसिला ही ढेर है। तुम दुनिया को वाकई बदलते देखने वाले हो जाओगे। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, भई देखो यह जिसम हमेशा रहने की जगह नहीं, इसमें स्वांसों की पून्जी भरी है, वह खाली हो रही है। मश्क समान समझ लो, ख्वाहे किसी और घड़े समान समझ लो। जब वह खत्म होगी तो जाना पड़ेगा। इसका ठीक इस्तेमाल करो, Right use करो। जितना जीवन नेक-पाक सदाचारी होगा, उतना स्वांस ठीक चलेगा। मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा आदर्श क्या है कि अपने आपको जानो और प्रभु को जानो। अगर आयु लम्बी भी हो जाये तो क्या हुआ ! जपजी साहब में इसका बड़ा निर्णय किया है गुरु नानक साहब ने। फ़र्माते हैं -

जे जुग चारे आरजा होर दसूणीं हो।

कि तुम्हारी आयु लम्बी हो जाय,मान लो चार जुगों के बराबर, कहते हैं नहीं चालीस जुगों के बराबर भी हो जाये -

नवां खण्डां बिच जानिये नाल चले सब कोय ।

नौ खन्ड् पृथ्वी में लिखा है,सारी सृष्टि, कहते हैं सब दुनिया में लोग तुमको जानने वाले हों। जानने वाले ही नहीं,जब तुम गुजरो तो बड़े अदब से साथ चल चल कर तुमको बाअदब होकर गुजारें भी ।

चंगा नाव रखाये के जस कीरत जग ले।

अच्छा नाम दुनिया में, तुमको सारा जहान अच्छा अच्छा कहे, हालांकि यह बड़ी नामुमकिन

बातें हैं। अरे भई सन्तों को लोगों ने, सारा जहान ही अच्छा नहीं कहता, लोग परमात्मा को गालियां निकालते हैं, मान लो ऐसा भी हो जाये, तुम्हारे सामने भी सारा जहान तुम्हारी तारीफ करे, पीछे भी तारीफ करे, फिर क्या कहते हैं ?

जे तिस नदर न आवई तां वात न पुच्छे कोय ।

जो तुम्हारी उस प्रभु से बन नहीं आई, उस के दर पर कबूल नहीं हुये, तो सब फ़ज़ूल है। तो सन्तों का जो उपदेश है, वह यही है कि आत्मा की प्रभु से बन आये। बस। न वह तुम्हारी आयु लम्बी करने के हक में है, वह कहते हैं जो प्रभु ने रखा है उसका फायदा उठाओ। साधारण नेक पाक जीवन बसर करके इस हकीकत को पा जाओ ताकि तुम्हारा मनुष्य-जीवन सफल हो जाये। बस। बात तो इतनी है।

तु अचेत गाफल हो रहता, सुने ना मूल कलाम ।

कहते हैं तू अचेत हालत में जा रहा है, तुझे होश ही नहीं, गफलत में जा रहा है। वक्त तेरा गुज़रा जा रहा है। वह आखरी दिन नजदीक आ रहा है। तेरे अन्तर वह मूल कलाम हो रहा है। उसकी तरफ तू तवज्जो नहीं करता। मूल कलाम इधर कहा है। उधर मौलाना रूम साहब कहते हैं कलामे कदीम। फरमाते हैं -

हैफ दर बन्दे जिस्म दर मानी । अफसोस तू जिसम के बन्धन में है ।
निशनवी आं सोते पाके रहमानी ॥

उस की पाक आवाज को तू सुनता नहीं जो तेरे घट-घट में हो रही है।

आ रही धुर से सदा तेरे बुलाने के लिये।

यह तुलसी साहब कहते हैं। यही शम्स तबरेज साहब ने फर्माया है -

हर दम निदाये हक आयद बसूये जानो जस।

हर घड़ी एक आवाज मेरी रूह को इस जिसम में आ रही है। क्या कहती है ?

कि ऐ शम्स तबरेज क्या दरबारगाह किब्रिया ।

कि ऐ शम्स तबरेज! तू उस मालिक की दरगाह में वापस आ जा। तो सारे महात्मा यही कहते हैं। यह एक ऐसा उपदेश है जो सब को उस तरफ मुतवज्जो (प्रेरित) करता है। क्या, कि हरेक इन्सान में एक आवाज हो रही है, कलामे कदीम हो रहा है, नाद हो रहा है, प्रणव की ध्वनि हो रही है। उस को श्रुति कहा वेदों ने, उसी को उपनिषदों ने उदगीत करके बयान किया है। और जरतुश्त ने अपनी जगह बयान किया है। हर एक महात्मा ने नाम, शब्द वगैरा कहा। घट-घट में हो रही है, उस के आधार पर सब दुनिया चल रही है। हमारा जिसम भी चल रहा है। अगर उसके साथ Contact तुम कर लो, जुड़ जाओ, उसमें महारस है, बाहर के रस फीके पड़ जायेंगे। तो हर इन्सान में प्रभु ने एक आवाज रखी है कहो। वह कलामें

कदीम है। जब से दुनियां बनी उसी के आधार पर सब कायनात (सृष्टि) चल रही है। वह अब भी हो रही है, मगर हम क्यों नहीं सुनते ? क्योंकि हमारी सुरत बाहर फैल रही है।

जिच्चर एह मन लैहरी बिच है, हौमे बहुत अहंकार ।
तिच्चर सबदे साद न आयो, नाम न लगो प्यार ॥

जब तक मन में लहरें उठ रही हैं, कभी काम, कभी क्रोध, कभी मोह, कभी अहंकार की, तब तक शब्द का रस नहीं आता। जब तक रस न आये, उसका प्यार कैसे हो ? अगर लहरें हटें, तो अब भी सुनाई देगी। The very silence becomes vocal जो चित्त वृत्ति का टिकाव है ना, अन्तर चुपचाप जो है, Silence, उसमें आगे टिकाव हो तो उसमें अपने आप-

गगन में बीत होती अति झीनी ।

अति झीनी बात होती है गगन में। उसको सुनने वाला हो जायेगा। उसको सुने, उसमें महारस है। सुनने से बाहर के रस फीके पड़ जायेंगे। मन बाहर से हट जायेगा। जब ज्यादा लज्जत एक तरफ आ जाये।

जब ओह रस आवा एह रस नहीं भावा ।

दुनिया के रस फीके पड़ जाते हैं। उसी के सुनने से मन हमेशा के लिये काबू में हो सकता है। इसका और कोई उपाय नहीं है। सुख-दुख के धाम इन्द्रियों के भोगों-रसों को कब यह छोड़ता है ? जब कोई इसको इससे ज्यादा रस कोई मिले । भगवान कृष्णजी ने, जो उनके जीवन में आया है कि जमना नदी में उन्होंने एक बार छलांग मारी, नीचे हजार मुंह वाला सांप था। उसके सिर पर नृत्य करते हुये,बन्सरी की ध्वनि बजाते हुये, उस नाग का नथन किया है, वह कौन सा सांप है भई ? यह मन ही है हजार मुंह वाला सांप, जो घट-घट में बैठा है,वह प्रणव की ध्वनि जो घट-घट में हो रही है, उसको सुनने से यह काबू हो सकता है। उसका और कोई उपाय नहीं। या ऐसे महापुरुषों की सोहबत में, समझे, जिनके अन्तर वह चीज प्रगट है। उनके मण्डल में Charging है। वहां भी थोड़ी देर के लिये मन खड़ा होगा । समझे !

नफ्स सरगिज न कुशद जुज़ ज़िल्ले पीर ।

यह नफ़स कभी नहीं मरता जब तक इस पर किसी पीर का साया न पड़े -

सुरत साध संग ठहराई । तौ मन थिरता कुछ पाई ॥

तब मन खड़ा होता है। या महापुरुषों की सोहबत में -

जिस डिठिया मन रहसिये, सतगुरु तिस का नांव ।

जिसको देखने से मन थोड़ी देर के लिये टिकाव पकड़े, उसका नाम सत्गुरु समझो, वह

कमाई वाला महात्मा है। उसके मण्डल में Charging है। वह Atmosphere charged है। उसमें असर है, तो कहते हैं यह उपाय है, मन काबू करने का। बाहर से हटो,अन्दर चलो। यह जिसम चन्दरोज़ा है। तुम्हारे अन्तर कलामे-कदीम, वह शब्द की ध्वनि, प्रणव की ध्वनि घट-घट में हो रही है। उसको सुनो । यह मन बाहर की लज्जतों को छोड़ देगा। उसको कैसे तुम पा सकते हो ?

रामनाम कीर्तन रतन बथ, हर साधु पास रखीजै ।

रमे हुये नाम में कीर्तन हो रहा है, अखण्ड ध्वनि हो रही है । उसकी बेशकीमत (अनमोल) जो पून्जी है, वह हरि के साधु के पास रखी है।

जो बचन सत सत कर माने । तिस आगे काढ़ धरीजै ॥

जो उनके बचनों को सत करके मानता है उसको प्रगट कर देता है।

गुरु काढ़ तली दिखलाया। अखण्ड कीर्तन तिन भोजन चूरा ।
कहो नानक जाके सतगुरु पूरा ।

अखंड कीर्तन का भोजन किसको मिलता है ? जिसको पूर्ण महात्मा मिल जाये। चौबीस घन्टे वह ध्वनि जारी है। पहले थोड़ा अभ्यास से अन्तर्मुख होना पड़ता है । जब अन्तर के कान खुल जाते हैं, तो हर वक्त सुनाई देती है, वह ध्वनि तुम्हारी सुरत को Control में रखती है।

मन मूसा पिंगल भया पी पारा हरि नाम ।

चूहे को पारा पिला दो तो यह भारी हो जाता है, दौड़ने भागने से हट जाता है। मन के चूहे को अगर नाम के रस का पारा पिला दो, यह आना-जाना खत्म हो जाता है, दौड़-धूप खत्म हो जाती है। तो यही फर्मा रहे हैं, कि अरे भई तेरे अन्तर कलामे कदीम हो रहा है। तू उस मूल कलाम को नहीं सुन रहा है। तू बाहर भटक रहा है, तेरा जीवन बर्बाद हो रहा है -

तू अचेत गाफल हो रहता सुने ना मूल कलाम ।
माया नार पड़ी तेरे पीछे क्यों नहीं छोड़त काम ॥

कहते हैं, माया हाथ धोकर तेरे पीछे लगी पड़ी है। माया भूल को कहते हैं -

एह शरीर मूल है माया ।

शरीर से माया का अगाज होता है। तुम इस जिसम के चलाने वाले थे, जिसम का रूप बन गये। यह माया है। अरे भई न बच्चे माया है, न रुपया माया है, न जिसम माया है, न बाहरी साज़ो-सामान माया है। जब इस में रहते हुये तुम अपने आप को और प्रभु को भूल जाते हो, यह सब माया है, समझे !

दात प्यारी बिसरिया दातार। जाणें नाही मन बिचारा ।।

दातें तो प्यारी हैं, वह दातार भूल गया। यही माया है। वह दातार भूल गया, दातें प्यारी हो गई। यह दुनिया, यह जिसम, यह ताल्लुकात, हम समझते हैं, यह हमेशा रहेंगे। अरे भई तूने आखर इसको छोड़ना है। इसलिये बड़े प्यार से समझा रहे हैं,कि भाई तू क्या कर रहा है ?''क्यों नहीं छोड़त काम।'' कामनाओं को छोड़ दो। काम किस को कहते हैं ?

जेती मन की कल्पना काम कहावें सो।

कबीर साहब की तारीफ है। और जब उस का ताल्लुक जिसम से आता है, तो ब्रह्मचर्य की रक्षा की मुराद है। वीर्य को पात मत करो। उसकी रक्षा करो। ब्रह्मचर्य की रक्षा जिन्दगी है। इसका पात करना मौत है। Chastity is life sexuality is death. तो कहते हैं, कामनाओं से रहित हो जाओ, समझे ! जब इससे रहित हो जाओगे तब क्या होगा ? माया से बच जाओगे। यह माया कब रहती है ? जब कामना हो। इसीलिये महात्मा बुद्ध ने यह कहा कि Be desireless खाहिशों से रहित हो जाओ, कामनाविहीन हो जाओ। समझे ! कामनाविहीन होना, यह माया से बचने का तरीका है। फिर यह भी काफी नहीं कामना विहीन, जब शब्द की तान अन्दर लगेगी तब, असल कामना विहीन तो तब ही होगा, मगर बाहर दरख्त को अगर काटना है, पहले उसकी शाखाओं को काट दिया जाता है कि जरा हलका हो जाता है काटना, तो बाहर से कामनाओं को हटाओ। अन्तर जब तक कोई ऊंचा रस मन को नहीं मिलेगा, बाहर की कामना नहीं कम होगी,

माया नार पड़ी तेरे पीछे क्यों नहीं छोड़त काम ।
बिना गुरुदया छूटो नाहीं, या ते भजो गुरु का नाम ।

कहते हैं, बगैर पूर्ण पुरुषों की कृपा के तुम माया के हाथ से नहीं छूट सकते। ''मन माया के हाथ बिकानों '' बिक गये हम, बिकी हुई चीज कैसे वापस आती है ? हम भूल में जा रहे हैं। कहते हैं, जब तक गुरु की दया न मिले, कोई अनुभवी पुरुष न मिले, वह हम पर दया न करे, हम इससे कभी छूट नहीं सकते। 'भजो गुरु का नाम। इसलिये गुरु के नाम को भजो।

मोह माया सो रहे अभागे, गुरु प्रसाद को बिरला जागे।

सब महात्मा एक बात कहते हैं। 'सौ सथान' ही मत! ' मोह माया के अन्तर सारा जहान सो रहा है। गुरु कृपा से कोई कोई जीव जाग सकता है। बस। तो कहते हैं, इसलिये क्या करो, गुरु के नाम को भजो। गुरु को भजो। गुरु के नाम को भजो। गुरु नाम मुजस्सम (सदेह) है। समझे ! Word was made flesh and dwelt amongst us अर्थात् वह शब्द मुजस्सम (सदेह) हो गया और हमारे दर्मियान रहा।

एक दफा ईसूमसीह साहब ने कहा अपने चेलों को,भई जो कोई मुझे खायेगा, मुझे पियेगा, वह हमेशा की जिन्दगी को पा जायेगा। जो अनजान पुरुष थे, कहने लगे महाराज

किस तरफ से खायें ? यह बात भूल गये कि महात्मा शब्द स्वरूप होते हैं,वह शब्द-निष्ट और शब्द-श्रौत्री होते हैं। तो कहते हैं यही बात बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि भई माया के घाट से हटना, इस को, Self analysis (पिण्ड से ऊपर आने की विद्या) को पाकर अपने आप की होश आनी कहो, माया मोह से छूटना, किसी अनुभवी पुरुष की कृपा ही से हो सकता है। सारी दुनिया की ग्रन्थ पोथियों के तुम हाफ़िज बन जाओ, क्या तुम इस भूल से निकल जाओगे ? नहीं ! भूल तब ही निकलेगी, जब आप पिण्ड से ऊपर आ कर देखोगे कि यह मिट्टी का ढेर है। You transcend पिण्ड से ऊपर आकर तुम देखो, यह मिट्टी का ढेर है। यह ताल्लुकात, यह जिस्म मैं नहीं हूं, यह ताल्लुक कैसे हैं ? अन्तर से जड़ कट जाती है। तो बड़े प्यार से इसलिये कहते हैं, इसके वास्ते क्या करो, गुरु के नाम को जपो, जो नाम उन्होंने दिया है अन्तर (Contact) उस की कमाई करो और उसकी सोहबत संगत करो, दो ही चीजें है हमारे छुटकारे के वास्ते ।

मिल साध संगत भज केवल नाम ॥

बात वही कह रहे हैं। किसी महापुरुष की बाणी लो, सब यही कहते हैं। या गुरु या गुरु का नाम, गुरु की याद में, ''साहबआवे याद '' अगर किसी अपने जैसे का सुमिरन करोगे As you think so you become जिस का चिन्तन करोगे उसका रूप बनोगे। तो किसी अनुभवी पुरुष की सोहबत करो।

काम क्रोध परसे जे नाहन ते मूरत भगवाना ।

जिस में काम और क्रोध के वेग नहीं चलते, कहते हैं, वह भगवान की मूरत है। उनके देखने से ही विषय वासना दूर होती है। ऐसे अनुभवी पुरुष का नाम ही साधु, सन्त और महात्मा है। आलिमों का नाम साधु सन्त नहीं है याद रखो, न लेकचरारों का नाम है, न ग्रन्थों-पोथियों के हाफ़िजों का नाम है। अरे भई तुम सब कुछ हो जाओ, जब तक अन्तर में जो हालत है, वह नहीं बदलती, Out of abundance of heart a man speaks जो अन्तर में बस रही हालत है, उससे असर लेकर बचन आते हैं। आग जल रही हो, उसे हवा लग कर आ रही है, बेअखत्यार गर्म हवा आयेगी। बर्फ़ का ढेर लगा है, उससे हवा लग आयेगी, बेअखत्यार ठंडी आयेगी। अन्तर में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार बस रहे हैं। जो बचन, कितने ही मीठे उच्चारो, उसी का असर लेकर आयेंगे। वैसा ही असर दूसरों को दे देंगे। तो किसी अनुभवी पुरुष की सोहबत संगत ही फलदायक हो सकती है। लेकचरों पर मत भूलो। मौलाना रूम साहब ने कहा -

बहर देगे कि मैं जोशद, मयावर कासाओ बिनशीं ।

देग भरे बड़े उबल रहा है, बड़े प्रचार हो रहे हैं। जहां प्रचार होता, देग भरा उबलता देखो, वहीं प्याला लेकर मत बैठ जाओ। जरा विवेक से काम लो। हो सकता है वहां पर दूध न

उबलता हो, तेजाब ही उबल रहा हो। हमेशा से यह रहा है कि जहां असल है, वहां नकल हो रही है। कोई नई बात नहीं। जितनी जबर्दस्त ताकत दुनिया में काम करेगी उतनी ही जबर्दस्त उसकी Opposition (उसकी मुखालफ़ित) होगी। आँख खोलकर देखने का सवाल है। थोड़ा विवेक से काम लो भई। समझे! मनुष्य जीवन से फ़ायदा उठा जाओगे। अगर विवेक से क़ाम नहीं लोगे तो पशु-वृत्ति में रहोगे। कोई गुरु पशु बने रहेंगे, कोई ग्रन्थों के पशु बने रहेंगे, कोई तिरिया के, कोई इस के, कोई उस के। देखो हमें महापुरुषों की भी इज्जत है, ग्रंथों पोथियों की भी हमारे दिल में इज्जत है। सबके लिये इज्जत है। अरे भई विवेक से काम लो। उस में, गुरु में, कौन सी फ़जीलत (बड़ाई) की चीज है ? वह अनुभव जो वह रखता है, उसको भी मुबारिक है।

तिन की जीन खुरगीन सब पवित हैं ।

मगर एक और महात्मा आया, उसमें भी वही ताकत है, उससे नफरत क्यों है ? विवेक नहीं ! They are the children of light यहां कई बल्ब, फ़र्ज करो जग रहे हैं, बिजली से। अगर एक फ्यूज हो गया, दूसरा आ गया, दूसरा फ्यूज हो गया, तीसरा आ गया। मगर लाईट में क्या फ़र्क है ? जिसम तो गुरु नहीं भई ! जिसम के पोल पर जो ताकत इजहार करती है उसका नाम गुरु है। अरे भई वह पोल भी कदर के काबिल है ।

सबो घट मेरे साईयां सूनी सुंजी न कोय।
बलिहारी तिस घाट के जां घट परगट होय ॥

तो कहते हैं पशु वृत्ति से हट जाओ। हकीकत की तरफ़ वासिल होने के लिये क्या करो ? माया से हटो। माया से कब हटोगे ? जब किसी अनुभवी पुरुष के चरण नसीब होंगे। उसकी हिदायत के मुताबिक काम करोगे। माया कहां से असर करती है ? शरीर से माया शुरु होती है। पहले दिन वह कहता है, छोड़ो पिन्ड और चलो ऊपर। अन्तर भी माया है मुआफ़ करना, अन्तर भी माया की Stages है। माया है, प्रकृति है, प्रधान है। दर्जे-बदर्जे चलती हैं। तीनों से पार होकर हमेशा की राहत (शान्ति) मिल सकती है। मगर कम से कम तुम पिन्ड से ऊपर जाओ। कुछ बचत हो जायेगी। फिर भी हिदायत की जरूरत है। जो अगले मण्डलों का वाकिफ नहीं, आप वहां भी कहीं न कहीं फंस रहोगे। किसी गुरु की बड़ी भारी जुम्मेवारी है मुआफ करना। मामूली बात नहीं। लेक्चर देने वाले का नाम गुरु नहीं है ।

बा तो बाशद दर मकानो लामकां ।

जो तुम्हारे साथ रहे, जब तुम इस दुनियां में हो, जब तुम दुनिया को छोड़ कर जाओ, जीते जी या मर कर, वहां भी तुम्हारी हिदायत कर सके, जिसमें यह समरथा है उसका नाम साधु, सन्त और महात्मा है। ऐसे महापुरुषों की महिमा वेदों शास्त्रों ने गाई है, ग्रन्थों पोथियों ने गाई है। इसकी हमेशा ही महिमा होती रहेगी। अगर इसके खिलाफ आवाज होगी तो उनकी होगी जो So-called (तथाकथित) साधु, सन्त और महात्मा है, Acting pos-

ing (स्वांग रचना) कर रहे हैं। इसीलिये सन्तों ने बड़ा खोल-खोल कर समझाने का यत्न किया है।

गुरु जिन्हां का अन्धला । सिख भी अन्धले करम करें ।

फिर कहा -

अन्धे के राह दसिये। अन्धा होय सो जाय ॥

अगर कोई अन्धा है, उसके पीछे तुम भी चल पड़े हो, कौन चलेगा ? आंखों वाला तो नहीं चलेगा ! कहते हैं अगर कोई चलता है, आंखों वाला भी, तो वह भी अन्धा है ।

होय सुजाखा नानका, तां ओह क्या उजड़ पाय ।

एक महापुरुष किसी के पास तुम गये, तुम चाहते हो कि मुझे कुछ अनुभव मिले, वह नहीं दे सकता, फिर भी तुम अन्धा-धुन्ध चलते हो उसके पीछे, तुम भी अन्धे हो। महात्मा लिहाज़ नहीं करते -

साधु साची कहे बनाय ।

दिला दुखाने को नहीं, मगर हकीकत खोलकर समझा देते हैं। फिर मिसाल दी -

जिसदा साहब भुख्खा नंगा होवे, तिसदा नफ़र कित्थों रज खाय ।

फिर कहा -

सन्तन मोको पूंजी सौंपी ।

कुछ देना पड़ता है भई ।

जिया दान दे भक्ति लायन ।

कुछ तवज्जो देनी पड़ती है। जिसकी अपनी ही तवज्जो ठिकाने नहीं दूसरों को क्या देगा ? तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, अरे भई इस माया से कौन छूट सकता है ? जिसको कोई अनुभवी पुरुष मिले और दया कर दे, उसको पहिले ही दिन वह कहता है, दुख सुख का धाम छोड़ो, चलो भई अन्तर चलो, नाम का रस लो। उसकी याद में रहो, जो हुक्म देता है, उस पर फूल चढ़ाओ, तुम माया से रहित हो जाओगे ।

गुरु का ध्यान धरो हृदय में, मन को राखो थाम ।

अब एक चीज बतलाते हैं कि भई हम सब भी ध्यान कर रहे हैं। किस का ? बच्चों का, स्त्री का, दोस्तों-मित्रों का, अपनी जायदादों का, यह वह का ध्यान। ध्यान के बगैर इन्सान नहीं रहता। जो देखता है वही अन्तर आता है As you think so you become जिसका ध्यान तुम्हें है उसका सुमिरन भी है। जिसका सुमिरन है, उसका ध्यान भी है। दोनों लाज़म-मलज़्म हैं। तो दुनिया, बाल बच्चों, रुपये पैसे का सुमिरन और ध्यान कर कर के हम दुनिया का रूप बन चुके हैं।अब अगर इससे नफी होना है (छूटना है), हम दुनिया का

ध्यान करके, क्योंकि वे सब बन्धे हुये हैं, मन-इन्द्रियों के घाट पर, और जिसका ध्यान करो उस का रूप हम बन जाते हैं, इसलिये हम और बन्धनों में जा रहे हैं। कहते हैं, इसलिये अरे भई अगर ध्यान करना है तो किसी अनुभवी पुरुष का कर। उससे -

साहब आवें याद ।

प्रभु की याद आयेगी। अगर उसके (अनुभवी महापुरुष के) अन्तर मालिक प्रकट है तो तुम्हारे अन्तर भी मालिक प्रगट होने का खमीर मिलेगा (जाग लागेगी) ध्यान बड़ी भारी शक्ति है।

द्रोणाचार्य का किस्सा आप लोगों ने महाभारत में पढ़ा होगा। वह पांडवों के उस्ताद थे तीरअन्दाजी के। एक भील था। गया उनके पास। महाराज, मुझे भी अपना शिष्य बनाओ। वह कहने लगे, नहीं तुम शूद्र हो, मैं तुम को शिष्य नहीं बनाता। न कर दी उसने। उनको देखा, उनका ध्यान बसा लिया अपने अन्तर में। As you think so you become. तीरअन्दाजी सीख सकता है। अब एक दिन बाहर गये द्रोणाचार्य तो देखा एक हिरन था। उस का मुंह तीर से सिया हुआ था। कहने लगे, यह इल्म मेरे बगैर किसी को नहीं आता। यह कौन हैं ? आवाज़ लगाई कौन है ? सामने आ गया, कि महाराज मैं हूं! तुम्हारा गुरु कौन है? कहता है, द्रोणाचार्य! कहते हैं, मैंने तो तुमको कभी उपदेश नहीं दिया। समझे! कहने लगा, महाराज मैंने इस तरह से सीख लिया है। खैर आगे क्या किया इससे हमारी गरज़ नहीं,क्योंकि उन्होंने अंगूठा मांगा ताकि तीर-अन्दाजी के काबिल न रहे। तो मेरे अर्ज़ करने का मतलब है कि ध्यान शक्ति कितनी प्रबल है। कहते हैं हृदय में उसका ध्यान करो। ''ध्यान धरो हृदय में मन को राखो थाम।'' मन को खड़ा करने के लिये कोई चीज़ चाहिये ना। समझे ! यह बुत परस्ती शुरु हुई,क्यों हुई ? सिर्फ़ ध्यान को टिकाने के लिये थी। बुत बनाया, तस्वीर बनाई, ताकि उतनी देर के लिये ध्यान खड़ा रहे। उन्होंने कहा बजाय बाहर चीजों के जो हैं, इन का ध्यान करने की बजाय एक चेतन पुरुष का ध्यान कर लो, वह उससे बेहतर है। मन को रोकने के लिये एक उपाय है। मैं यहां एक और अर्ज कर दूं, कि चेतन पुरुष पूर्ण पुरुष का ध्यान बनता ही नहीं। हमारे जैसे Level (स्तर) के जो आदमी हैं ना, हम जैसे हैं, उसकी शकल देखो आंख बन्द करके वह शकल सामने आयेगी। जो महापुरुष है, पूर्ण पुरुष हैं, उसकी ध्यान में शकल नहीं बनती, क्योंकि हृदय मैला है। जितना कैमरे का लैन्स (शीशा) Strong (सूक्ष्म) होगा ना, उतनी बारीक चीज़ को लेगा, जितना मामूली होगा, बारीक चीज को नहीं लेगा। हमारा हृदय मैला है। उस पवित्र का ध्यान बैठता ही नहीं। इसलिये क्या करना चाहिये ? अब आप बतलायें। मुश्किल है ना। मैं तो हमेशा यही कहता हूं भई जो समर्थ पुरुष हैं, वह अपने आप आयेगा। खुदा वह है,जो खुद आप आये। और आता है। तजरूबा रोज़ दिन का बतलाता है। अभ्यास, उपदेश देते हुये, कई लोगों को स्वरूप अपने आप आता है, बगैर ध्यान के बतलाने के भी। जब वह चलता फिरता ध्यान आयेगा, जड़ता से तो

बच गया कि नहीं ? समर्थ पुरुष ही अन्तर आयेगा, दूसरा नहीं आ सकता। इन्द्रियों के घाट से ऊपर चलो तो स्वरूप अपने आप आयेगा ।

मगर ताहम मैंने एक बार अपने हजूर (बाबा सावनसिंह जी महाराज) से सवाल किया था, शुरू की बात है, मैंने पूछा कि महाराज, बाहर से तो हट गया, अन्तर वह स्वरूप नहीं आया जो सचमुच गुरु का है। फिर! दरमयानी मन्जिल में क्या करना चाहिये ? बाहर से तो हट गये । अन्तर में वह आया नहीं। कहने लगे, भई हम बच्चों का ध्यान करते हैं, गाय-भैंसों का ध्यान करते हैं, मकानों का ध्यान करते हैं, तो क्या साधु का ध्यान उससे भी बुरा है ? बड़ी खूबसूरती से बयान किया है। बात यह थी कि मैं कायल नहीं था। सच्ची बात है। चीज तो वही है। कुछ खड़े होने को कुछ चाहिये सामान, बाहर बनाया, बना कर अन्तर गये। बाहर, यह जितनी बुतपरस्ती है, कब से शुरु हुई ? इसीलिये बनाई गई, थोड़ा ध्यान टिकाने के लिये। जब ध्यान टिका, फिर नासिक का अग्राभाग, यहां आ गये। यहां से चले नीचे, और नीचे चक्रों में चले गये। यहां से शुरू था सिलसिला। जब अन्दर जाना लोग भूल गये, बाहरमुखी रह गये। मगर बात तो यह थी। तो सन्तों ने थोड़ा और ज्यादा वाजेह (स्पष्ट तौर पर) कहा कि चेतन स्वरूप का ध्यान ज्यादा अच्छा है। एक मुसलमान फ़कीर कहता है -

हरगिज़ मगो कि काबा, जे बुतखाना बेहतर अस्त ।

यह कभी न कहो कि काबा बुतखाना से अच्छा है। एक (काबा) हज़रत इबराहीम का बुतखाना है। एक हमने बनाये। कहते हैं, तुम्हारी नज़र में कौन सी जगह अच्छी है ? कहते हैं -

हर जा के हस्त, जलवाए जानाना बेहतर अस्त ॥

जहां उस प्रभु का चलवा हो रहा है, वह सब से बेहतर है। तो वह कहां है ? चेतन पुरुष में ही होगा ना, इसीलिये कहा -

हर की पूजा सतगुरु पूजो, कर कृपा नाम तरावे ।

जिसके अन्तर वह प्रगट है, उसकी पूजा ही हरि की पूजा है। तो सत्स्वरूप हस्ती का ध्यान करो। ध्यान बनता नहीं, इसलिये जो वह सिद्धी देता है, उसकी कमाई करो, अपने आप सामने आयेगा। मगर ताहम साधु के याद करने से ''साहब आवें याद ''। मन को रोकने के लिये, खड़ा करने के लिये। सन्त महात्मा तो पहिले दिन ही भाई साहब, अन्तर में ज्योति प्रगट कर देते हैं। पहिले दिन ही खड़े होने को एक सामान मिल गया कि नहीं ? उसमें अपने आप स्वरूप आ जायेगा। कितनी भारी फ़जीलत (बड़ाई) है मैं अर्ज करुंगा अनुभवी पुरुष की। जो आम लोग हैं Lowest level के, कहने का मतलब है बिलकुल क, ख, से शुरु होने वाले अल्हड़ लोग हैं, उनको भी पहले दिन रौशनी आ जाती है। तो इससे से बढ़ कर और विश्वास क्या चाहिये ? तो कहते हैं, भई मन को खड़े करने के लिये अन्तर उस सतस्वरूप हस्ती का ध्यान करो, याद करो भई! अन्धे हो, नहीं देख सके, अन्धों की तरह

बैठ जाओ। तुम्हारा मालिक आया, सम्भल कर बैठ जाओ। इतना ही काफी है। चलो। ध्यान से काम करो। अगर अनुभवी पुरुष होगा, तो पहिले ही दिन तुमको थोड़ा तजरूबा देगा। थोड़ा दे देगा, तो उसी को बढ़ाओ। वही ध्यान को खड़े करने के लिये बड़ी भारी चीज है।

एक बच्चा है। अन्धेरी कोठड़ी में उसको बन्द कर दो। क्या करेगा ? रोयेगा ? चीखेगा, पुकारेगा, दर्वाजे तोड़ेगा। अगर उसको अन्तर में कुछ खेलने का सामान मिल जाये, बहुत अच्छा, वह चुप कर के रहेगा। अन्तर में नूर आ जाये, ज्योति प्रगट हो जाये, ध्वनि जारी हो जाये, तो उसमें महवियत हो जायेगी अपने आप। जो समर्थ पुरुष है, अपने आप आयेगा। तो यह सिर्फ़ मैंने Comparative चीज़ अर्ज़ की भई कि दुनिया के ध्यानों से महात्मा का ध्यान अच्छा है। हम स्त्रियों का ध्यान करते हैं, दोस्तों-मित्रों का करते हैं, बाल-बच्चों का करते हैं, दुकानों जायदादों का करते हैं, अरे भाई उससे साधु का ध्यान अच्छा है। क्यों ? आखर उसमें साधुताई है ! तो कहते हैं, मन को खड़ा करने के लिये उसकी याद में बैठो। जहां याद होगी, अपने आप आयेगा वह।

गुरु का ध्यान धरो हृदय में, मन को राखो थाम ।
वह दयाल तेरी दया बिचारें, दम दम करें सहाय ।

कहते हैं वह दयाल पुरुष है। सन्त महात्मा रहमदिल (दयालु) होते हैं। जिस को अपनी नज़र में ले लें, जो उनकी नज़र में आ जाये, उस पर दया करते हैं। Out of compassion दया की धारा चलती है,सबको रंग देती है। कहते हैं, वह तेरी सहायता करेंगे। अगर उसी की याद होगी, दिल-दिल को राह बनेगी। उसकी संभाल तो वैसे भी है। जो भी किसी समर्थ पुरुष के चरणों में आ गया, वह जाता तो कहीं नहीं, मगर दिल-दिल को राह बने, उस सम्भाल को प्रत्यक्ष अपनी आंखों से होता हुआ देख लेता है। समझे ! आये दिन, अमेरिका से चिट्ठियां आती हैं। कल भी एक चिट्ठी आई थी। आगे हमेशा आती हैं, वहां प्रत्यक्ष गुरु-सम्भाल कर रहा है। वह देखते हैं। आया, सामने गुरु आ गया वहां सामने आँख खुली भी देखते हैं, वैसे भी देखते हैं। तो कबीर साहब ने इसीलिये फर्माया, कि गुरु सात समुन्दरों के पार रहता हो, सिख इस तरफ रहता हो-

दोनी सूरत पाठय ।

गुरु, याद रखो, जिस लफ्ज गुरु को वेदों-शास्त्रों, ग्रन्थों-पोथियों, ऋषि, मुनियों,महात्माओं ने बरता है ना, वह लफ्ज किसी ऐसी हस्ती के लिये मखसूस(रखा गया) हो, जिसमें यह समर्था हो। आज बट्टा उठाओ तो गुरु मिलते हैं। अरे भई ऐसे महात्मा हमेशा कामयाब रहे, अब भी कमयाब हैं। जब तक ऐसा महापुरुष नहीं मिलेगा, परमार्थ में कामयाबी नहीं होगा,मन सोया रहेगा, इन्द्रियों के भोगों- रसों में। कितने ही आलम, फ़ाजल (विद्वान)

तुम क्यों न बन जाओ, जमीन-आसमान के कुलाबे मिलाने वाले बन जाओ, हकीकत नहीं खुलेगी, जब तक कोई हकीकत खुली आँख वाला महात्मा न मिलेगा। और वह कब खुलती है ? जब तुम पिण्ड से, सुख-दुख के धाम से ऊपर आते हो, तब वह आपको उठाता है। ''खैचे सुरत गुरु बलवान ।'' वह आपको बिठा कर ऊपर लाता है. सब को तजरूबा कराता है। जिस्म बेहिस (निश्चेत) हो जाता है, अन्तर की आंख खुलती है। ऐसे समर्थ पुरुषों की महिमा वेद-शास्त्र,ग्रन्थों-पोथियों ने गाई है, और हमेशा गाते रहेंगे ।

वह दयाल तेरी दया बिचारें। दम दम करें सहाय ॥
छोड़ भोग, क्यों रोग बसावे। या में नाहीं आराम ॥

कहते हैं, अरे भाई भोगों को, इन्द्रियों के भोगों से बाज आओ। समझे। भोग जो तुम भोगते हो ना, उससे रोग पैदा होते हैं। तुम समझते हो तुम भोग को भोग रहे हो, मगर भोग तुम्हें भोग लेते हैं। तुम भोग भोगने के काबिल ही नहीं रहते, कहते हैं, तू क्यों रोगों को बसाता है। अगर भोगों से बच जाये, एक आदमी को खाने का भोग है, रस है बड़ा। खा-खा कर पेट खराब हो जाता है, बीमारियां पैदा हो जाती हैं। जो कामी पुरुष है, उसका दिल, दिमाग कभी ठिकाने नहीं रहता।

कामी कुत्ता तीस दिन, मन में रहे उदास ।

यह चीजें बड़ी बरकत वाली हैं Chastity is life. ब्रह्मचर्य की रक्षा जिन्दगी है। इसका पात करना मौत है। इसका जायज़ इस्तेमाल न करो। क्रोध में आदमी की रूह फैलती है। दिल में राहत, चैन, नहीं रहता। अन्तर जब घबराता है, भूतों की तरह मारा-मारा फिरता है। कौन सी हालत अच्छी है ? अहंकार में मता हुआ, पांव जमीन पर नहीं टिकता, उसको जमीन, जमीन नजर नहीं आती, इन्सान, इन्सान नहीं नजर आता।

तो कहते हैं भई भोगों से हटो। भोग तुमको रोग पैदा करते हैं, रोगों से फिर तुम्हारा ठिकान नहीं रहता। जितना भोगों से बचे उतना जीवन संयम में रहेगा । तुम्हारा तन भी सुखी, मन भी सुखी। परमार्थ के लिये भी काबलियत पैदा होगी। अगर भोगों में फंस रहे हो, तो क्या है। इसलिए मैं आपको अर्ज करुं, जो आपकी डायरी रखने की हिदायत करी जाती है ना, उसका कुछ मतलब है। हम लोग डरते हैं रखने को। भई डरो नहीं, इसमें तुम्हारी भलाई है। मैंने Student life (विद्यार्थी जीवन) से रखी है। इसमें त्रुटियां एक-एक करके, स्वामी जी महाराज फर्माते हैं, निकालते चले जाओ। अगर खाली तुम्हारा जीवन नेक-पाक सदाचारी बन जाये तो तुम्हें बरकत महसूस होगी। ठंडक लूं-लूं में (रोम-रोम में) एक राहत महसूस होगी। परमार्थ का रंग जो चढ़ेगा वह तो और बात रही ना, जितना साफ हो उतना हल्का रंग भी रंग दे जायेगा, नशा दे जायेगा। हमारा कपड़ा तो साफ नहीं है।

चुनर मेरी मैली भई । मैं कहां पै जाऊं धुलान ॥

जितने साधन लोग हमें देते हैं वह इस चुनर को और इन्द्रियों के भोगों-रसों में लगाए

रहते हैं। अरे भई इससे ऊपर आये तो यह बाहर की मैलें हटें, अन्तर नाम का रस मिले। साबुन नाम का मिल जाये तो इस पर लगे हुए दाग हैं, वह भी धोये जायेंगे। तो कोई ऐसा महापुरुष मिल जाये तो काम बन जाता है। समर्थ गुरु भी मिले और चेला भी आज्ञाकारी मिले तब क्या कहना ! रंग चढ़ जाता है। फिर भी देखिए कलजुग कितना घोर है फिर भी लोगों को, हर एक को तजुर्बा मिलता है। यह बखशिश है। वह (सतगुरु) देखते हैं, दुनियां में घोर अन्धेरा छा रहा है। शायद कोई जीव बच जाये।

छोड़ भोग क्यों रोग बसावे । या में नहीं आराम ॥

इसमें भई तुमको सुख-शान्ति नहीं मिलेगी, भोगों रसों में लम्पटताई से, कामनाओं से हटो।

गुरु का कहना मान प्यारे । तो पावे बिसराम ॥

तो कहते हैं, अरे भई गुरु का कहना मान लो। अगर उसका कहना मान लोगे तो तुमको हमेशा का सुख मिल जायेगा, राहत मिल जायेगी, शान्ति पा जाओगे। वह दयाल है। वह चाहता है मेरे बच्चे सुखी हो जायें। कहते हैं उसका कहना मान लो। हम कहना नहीं मानते। हम जी हजूरिये बड़े हैं, मत्थे टेकने वाले बड़े हैं, नाचने वाले भी बड़े हैं, मगर कहना मानने वाले नहीं ।

मानो री कोई कहन हमारी ।

कोई तो कहना मानों भई । जी हजूरिये बनने से काम नहीं बनेगा, मत्थे टेकने से काम नहीं बनेगा। अरे भई गुरु को मत्था टेकने वाले की कल्याण में शक है अभी। जो गुरु के बचनों पर मत्था टेकने वाला है, सोलह आने सही उसकी कल्याण है। तो कहना मानो भई। वह क्या कहता है ? भई तुमने जो काम करना है, वह करो। नाम तुम्हारे अन्तर है। पिण्ड को छोड़ो, जीवन को नेक-पाक रखो। और तो वह कुछ नहीं मांगता ? और फिर जो कुछ करता है,कहते हैं -

रहनी रहे सोई सिख मेरा। सो सहाब मैं तिस का चेरा ॥

कहते हैं भई शाबाश, शाबाश, काम तो वह अपना कर रहा है, मगर हमारे हजूर (बाबा सावनसिंहजी महाराज) थे, जब कोई उनके पास आता था ना, बाहर की, कायदे की बात है हमदर्दी की, गुरु जब जिसम में होता है तो सब से हमदर्दी का भाव प्रगट करता है तो पूछ पाछ के कि तुम्हारे बच्चे राजी हैं ? घर में सब राजी हैं? यह है, वह है, तो कहना, सुनाओ भई क्या हाल है! जी, मेरा बच्चा बीमार था, अब ठीक है मेरी स्त्री को यह था, वह अब ठीक है। फलाना मुकदमा, था, अब जीत हो गई। वह कहता चला जाता। जब वह कह चुकता तो हजूर ने फ़र्माया करना, भई मेरा काम भी कुछ किया ? बताओ, काम तो उसी का है। समझे! उसमें बेहतरी उसी की है। वह कहते हैं, मेरा काम भी किया। उस काम को करने को वह अपनाता भी है। अच्छा भई चल, मेरा ही काम सही, तू कर तो सही ! फिर जरा मुंह ढीला कर लेते थे। करे तो कोई कहे !

भई इसीलिये मैंने जो डायरी रखी है, सोच समझ कर रखी है। जो परमार्थ में काबयाब होना चाहते हैं वह जरूर होंगे। दो और दो चार-अगर वह डायरी रख कर अपना जीवन नेक-पाक बना कर साथ बाकायदा भजन करें। जो कर रहे हैं, उनकी तरक्की हो रही है। पहिले दिन हर एक को तजरूबा मिलता है। हजूर की कृपा से और महापुरुषों की दया से। अगर अब भी आप समय से फ़ायदा नहीं उठाते तो अपने भाग्य रहे और क्या! मुआफ करना बड़े-बड़े लोग आते हैं। कहते हैं, सारी इण्डिया में फिर कर आये, यह चीज़ नहीं मिल रही है। अरे बई तुमको मिलती है। अगर तुम उसकी कदर नहीं करते तो बदकिसमती है और क्या कहें! तो कहते हैं, गुरु का कहना मानो भई। हम मन का कहना मानते हैं। दोस्तों-मित्रों का कहना मानते हैं। दुनिया के लिये नाच उठते हैं। मगर गुरु का कहना नहीं मानते ।

एक बाग है। उसमें दो माली हैं। एक माली सुबह से शाम तक ईमानदारी से काम करता है एक और माली है, वह काम चोर है। काम कोई नहीं करता। जब मालिक बाग़ में आता है, उसी के बाग से फूल चुन कर उसके सामने गुलदस्ता रख देता है। दूसरा माली क्या करता है, नाचता है। वाह मेरे गुरु की दाढ़ी कितनी सुन्दर है। उसकी पगड़ी कितनी सफेद है। यह चाल कैसी चलता है! नाचता है, टापता है। बताओ गुरु अगर जानी-जान (अन्तर्यामी) है, तो किस पर खुश होयेगा ? अगर बुद्ध है, तो अलेहदा बात रही, So-called (तथाकथित) गुरु है तो अलेहदा बात है। अगर वह दिल के भाव आँख से देख लेता है कि इसमें क्या है! हजूर फर्माया करते थे हमारे, कि जब कोई आदमी आता है तो वह (गुरु) देखता है जैसे शीशे की बोतल है, इसमें अचार है या मुरब्बा है! मगर वह पर्दापोश होता है। अरे भई वह किस से खुश होगा ? जो कहना मानेगा, नाचने-टापना वाले की कल्याण न हुई न हो सकती है! बड़ी साफ़गोई मैं पेश कर रहा हूं। दुनिया बड़ी भूल में जा रही है। घर में बैठों, भजन करों, नेक-पाक रहो, तुम गुरु के नजदीक से नजदीक हो जाओगे। साथ चौबीस घन्टे रहो, उसका कहना नहीं माने, तुम दूर से दूर हो। फायदा क्या है ? तुम्हारे अन्तर शान्ति नहीं होगी, बनेगा कैसे ? छोटी-छोटी कमजोरियां हर एक इन्सान में जो हैं, उनको एक-एक कर के गिन-गिन कर, स्वामीजी महाराज फर्माते हैं,निकालते चले जाओ। जब तक वह नहीं निकलती अन्तर रंग थोड़ा आता है फिर वह और बदरंग हो जाता है। पूरा फ़ायदा नहीं होता। अगर जीवन नेक-पाक साथ हो, तो जीवन बदल जाये। आज से दस साल पहिले जो हमारी हालत थी, वही आज भी है।

वही है चाल बेढंगी, जो आगे थी सो अब भी है ।

कैसे कल्याण हो ? मेरे एक हेडमास्टर थे, जब मैं पढ़ा करता था, अंगरेज था Charles Frank Hall. बड़ा शकील (सुन्दर) आदमी था हेड मास्टर था, बड़ी सखत तबीयत का था। बात-बात पर गालियां निकालनी, बैत दो चार लगा देने। उसका यह खासा था। एक लेडी आई, मिशनरी थी। उसको कहने लगी, भई मैंने तुमसे शादी करनी है, मगर मैंने तुमको

पादरी बनाना है। पादरी का यह कायदा है, कि तुम गालियां निकालो, वह हंसते रहते हैं। पादरियों में यह देखेंगे। यह Training है खास। कोई वहां कुछ बुरा-भला कहे, वह हंस कर एक जवाब दे देंगे। फिर हंस कर एक जवाब देंगे। ट्रेनिंग करनी पड़ती है। वह कहता है, अच्छा मुझे तीन महीने की मोहलत दो। तीन महीने क्या अभी दूसरा ही महीना गुजरा था कि एक लड़का कलास में खड़ा हो कर मास्टर को गालियां निकालता है, और वह हंस रहा है!

अरे भई कोई आदमी भी बदल सकता है, अगर वह बदलना चाहे तो Where there is will there is way. हम लोग बदलना नहीं चाहते। वही पुरानी आदत जो कोई बनी है ना वह हम छोड़ नहीं सकते हैं। न ज़बान पर काबू है, न दिल पर काबू है, न आँख पर काबू है, न कान पर काबू है। तग न नारी तग न इन्द्री न आंखों पर रुकावट है न कानों पर, न दिल पर,न मन पर। जो आया उसी तरह शुतर बेमुहार (बेनुकेल के ऊट) की तरह उसी तरह किये जाता है। भजन करता भी है। कुछ फ़ायदा पहुंचता है,मगर पूरा फायदा नहीं। फिर! उस में गिरावट आती है, फिर नीचे आ जाता है। तो कहते है-गुरु का कहना मानो भई। If ye love me keep my commandments. क्राईस्ट कहता है कि अगर तुम मुझसे प्यार रखते हो तो मेरा कहना मानो। जो मैं हुक्म देता हूं। उस पर फूल चढ़ाओ। हुक्म के मानने में कल्याण है। यह बात है असल। नाचने-टापने वाले की नहीं फिर यह कहा, Let my words abide in you and you abide in me. कि मेरे वचन तुम्हारे हृदय में बसें, और तुम मेरे हृदय में बसो। तुम उसके हृदय में कैसे बसोगे ?

रखो किसी को दिल में, बसो किसी के दिल में।

हृदय में रखोगे, याद रखोगे, बेअखत्यार उस जगह बसोगे कि नहीं ? अगर यह दो चीजें तुम कर लो, You shall have anything you ask. तुम को हर एक चीज मिलेगी जो मांगोगे।

पिता कृपाल आज्ञा यह कीन्ही, बारक मुख मांगें सो दीन्ही ।
नानक बारक यही सुख मांगे, मोहे हृदय बसे नित चरणा ।

यह सबसे ऊंची मांग है। तो स्वामीजी महाराज बड़े प्यार से समझा रहे हैं, भई क्या कर? ''गुरु का कहना मान प्यारे तो पावे बिसराम''। हमेशा के सुख को पा जायेगा। आना जाना तेरा खत्म हो जायेगा। वह क्या कहता है ? ''छोड़ो दुख सुख का धाम, लगो अब चढ़ कर तुम सत नाम।'' यह कहना मानो और वह क्या कहता है ? नेक-पाक सदाचारी बनो, गुरु की याद रहे, दुनिया को बसाने की जगह गुरु और प्रभु को बसाओ, काम बन जायेगा। जो वह कहे उस पर फूल चढ़ाओ ।

मन के कहे चलो मत कोई। यह भव में गोते दिलवाये ॥

मैंने कल ही शायद ज़िकर किया था कि कूकों के गुरु थे न बाबा रामसिंहजी, उनके साथ सी.आई.डी. के सिपाही रहते थे। खैर उनको सजा यह मिली कि उनको जलावतन कर

दिया और कहा कि एक आदमी इनके साथ जा सकता है। एक आदमी तैयार हुआ कि मैं चलूंगा साथ, सेवा करूंगा। खैर गये, जा कर जलावतन जहां हुए उस मुल्क में पहुंचे। वहां पहुंच कर कहने लगा, महाराज मैं तो सी.आई.डी. का सिपाही था, तुमको यहां पहुंचा दिया, अब मैं जाता हूं। यह मन सी.आई.डी. का सिपाही है सबके साथ लगा है। जब तक तुमको जलावतन न कर ले, तुम्हारा साथ नहीं छोड़ता। कोई समर्थ गुरु मिल जाये, तुमको इन्द्रियों का घाट छुड़ाये। मन कहां से पकड़ा जाता है ? इन्द्रियों के घाट से। अगर इसको अन्तर का रस मिल जाये, बाहर से हट जाये, छुटकारे का सामान हो जायेगा।

गोपीचन्द थे। जब उन्होंने सन्यास धारण किया है, चेले बने गोरख नाथ के, तो पहिले गुरु ने हुक्म दिया जाओ भिक्षा मांग लाओ। घर में गये ताकि लोक-लाज न रहे। जो रानियां थी, उन्होंने क्या किया, सब जेवर उनके हवाले कर दिये, अब हमारा सुहाग खत्म हो गया। फिर माता के पास गये। माता कहने लगी, देख बच्चा यह चीजें अगर मैं तुझको दूंगी, यह चन्द रोज़ रहेगी। जाती रहेंगी। मैं तुमको वह चीज़ देना चाहती हू जो तेरे साथ हमेशा काम में आने वाली है। कहा हाँ माता कहो। कहने लगी पहिली बात मजबूत किले में रहना। माता मजबूत किला कहां वहां पर सड़कों पर सोना होगा। रोड़ों का बिछोना होगा। क्या पता कहां रात आयेगी कहां नहीं आयेगी। कहने लगी मजबूत किला गुरु की सोहबत-संगत है। उससे दूर न जाना। बड़ी आलायशों (विकारों) से इन्सान बचा रहता है। फिर और कई बातें कहीं और कहा, भई अच्छे अच्छे पकवान खाना। कहने लगे माता वहां रोटी भी खाने को मिलेगी कि नहीं यह भी पता नहीं, कहने लगी, जब तक सख्त भुख न लगे खाना नहीं खाना। कहती है बड़े नरम-नरम बिछौनों पर सोना। कहते हैं, वहां तो रोड़ों के बिछौने होंगे। कहने लगी, जब सख्त नींद तुमको गिरा ले, फिर सोना, वैसे नहीं सोना। तो मजबूत किला है गुरु की सोहबत, याद रखो। उसका कहना मानो तुम्हारी कल्याण है। एक ही जन्म में फैसला होगा। जो कहना नहीं मानते उनके लिये ''हनोज़ दिल्ली दूरअस्त।'' (अभी दिल्ली दूर है) तीन चार जन्म लिखें हैं ना महात्माओं ने भई यह जन्म तो गया ना ! जो जीतेजी पण्डित है, वह मर के भी पण्डित है। जो जीतेजी अनपढ़ है वह मरकर पण्डित थोड़े बन जाता है।

गुरु का कहना मान, प्यारे तो पावे बिसराम ।
दुख तेरे सब दूर करेंगे, देंगे अचल मुकाम ॥

कहते हैं वह तेरे सब दुखों को नाश, दूर करेंगे। वह मुकाम तुमको देंगे जो अचल है, अटल है, गिरायमान होने से रहित है। गुरु जब नाम देता है, साथ हो बैठता है। वह जिसम नहीं, वह पावर (ताकत) है। और हर वक्त संभाल करता रहता है। अगर इसका (शिष्य का) मुंह उस तरफ हो गया तो प्रत्यक्ष हर वक्त उसकी सम्भाल को देखता है,नहीं तो फिर भी वह Direction (हिदायत) नेक रस्ते की करता रहता है। यह मन के अधीन हो कर नाचता है तो अलेहदा बात रही, मगर फिर भी कोई वक्त आता है, जो उसकी हिदायत को यह प्रतीत करता है कि हाँ कुछ हो रहा है। गुरुबाणी में आया है -

जब ते संगत भेटे साधु, भले दिवस होय आया ।

कि जब से साधु की संगत मिली है तब से भले दिन हमारे आ गये। साधु, साधु हो। वह हर एक तरह की सम्भाल करता है। बाहर, अन्तर कर के। आखर उसका सबसे बड़ा काम क्या है ? इसको निजधाम में पहुंचाना, जहां से फिर न आना न जाना हो।

जितने हम कहना मानने में देर करते हैं, उतने ही लम्बे रस्ते पड़ जाते हैं। तीन कृपायें चाहिये मुआफ करना। पाणाव दास एक महात्मा हुए हैं, वह कहते हैं, भई तीन कृपा चहिये। पहिली कृपा, सबसे पहिले परमात्मा की चहिये। कहते हैं, परमात्मा ने तो कृपा कर दी। क्या? हमें मनुष्य जीवन दे दिया। उसकी कृपा हो गई। फिर परमात्मा ने दया कर के हमें किसी समर्थ पुरुष से मिला दिया। कहते हैं बस परमात्मा की कृपा खत्म हो गई। बड़ी साफ़गोई है। अब गुरु दया करे तो नाम के साथ जोड़ दे। गुरु के अन्तर परमात्मा ही है।

दस्ते तो दस्ते खुदा, चश्मे तो मस्ते खुदा ।

उसमें यह रंग है प्रभु का । कहते हैं, वह दया करे तो हम को नाम के साथ जोड़ दे। अन्तर तजरूबा दे दे, फिर कहते हैं, यह दोनों कृपा हों, फिर इसके साथ आत्म-कृपा भी चाहिये, हम अपने-आप पर कृपा करें। वह क्या ? जो बताया है, वह करें। अगर आत्म-कृपा न हो, गुरु-कृपा और प्रभु-कृपा पूरा फल नहीं लाती। बड़ी साफ़गोई की है। समझे ! हमारे हजूर फ़र्माया करते थे कि जो लोग भजन सुमिरन करते हैं, जीवन को नेक-पाक रखते हैं, वह अपने-आप पर रहम करते हैं। जो विषय-विकारी जीवन, भोगों-रसों में लम्पट हो रहे हैं, प्रभु की याद नहीं करते, वह अपनी गरदन अपनी छुरी से काट रहे हैं। इसीलिये कहा है-

अपने जीब की कुछ दया पालो। चौरासी का गेड़ बचा लो।

यह अपने आप पर दया करना है। दूसरों पर तो सारा जहान ही दया करता है। कौन करता है। मुआफ करना ? ग़र्ज का बन्धा हुआ करता है। जहां पर ग़र्ज़ है, वहां पर दया नहीं है। Charity begins at home. अरे भई जिसने अपने आप पर दया नहीं की वह किसी पर क्या दया कर सकता है ? अपने-आप पर दया करना क्या है ? नेक-पाक जीवन बनाओ, सदाचारी, और नाम भज़ो। अनुभवी पुरुषों की सोहबत-संगत में रहो। यह आपने पर दया है। तो फर्मा रहे हैं, बड़े प्यार से -

दुख तेरा सब दूर करेंगे, देंगे अचल मुकाम ।
राधा स्वामी कहत सुनाई, खोज करो निज नाम ॥

कहते हैं, वह मालिक कुल, राधास्वामी, स्वामी तो सब महापुरुषों ने उस मालिक कुल के लिये बरता है, राय शालिग राम जी नेउसे राधा-स्वामी करके कहा है, मालिक, हमारी सुरत का स्वामी। हमारे दिल में इसकी इज्जत है। ऊंचे से ऊंचा नाम है यह दो जगह बरता है। कहीं मालिक कुल के लिये। और कहीं गुरु के लिये। वह मालिक कुल इन्सानी पोल पर बैठा हुआ खोल कर समझा रहा है। क्या करो, ''खोज करो निज नाम''। तुम्हारे अन्तर एक

निज़ का नाम है। उसकी खोज करो। वह तुम्हारे घट-घट में है। बाहरी दुख सुख के धाम को छोड़ दे। ''लगो तुम चढ़ कर अब सत नाम'' सत नाम कह दो, निज नाम कह दो, जो अटल और लाफानी है। उसके साथ लगने से जीव की कल्याण है। यह उपदेश है स्वामीजी महाराज का। आप देखेंगे Parallel thoughts आपको हर एक महापुरुष की बांणी से कुछ न कुछ दिये गये। आप देखेंगे तालीम एक ही है। आत्म-पद न दो हुये न दो हो सकते हैं। सामाजिक लिहाज से आपके Temperaments (रुचियां, स्वभाव) अलग अलग है। Climates (आबोहवा) रस्म रिवाज़ अलेहदा अलेहदा हैं। इसलिये उसके मुताबिक कुछ भिनता, थोड़ी थोड़ी तबदीलियां नजर आती हैं। मगर गर्ज उनकी भी वही है। गुरुद्वारे में जाओ। सिर नंगे न बैठो भई, बेअदबी है। सिर ढाँप कर बैठो। ईसाईयों के गिरजों में जाओ तो नंगे सिर बैठना अदब की निशानी है। वहां सिर ढांप कर बैठना ठीक नहीं। यह इखतलाफ़ (फर्क) रस्म का क्यों बन गया। कि उनका रिवाज ही ऐसा है। गर्ज तो दोनों की यही है ना बाअदब हो कर बैठो। वह कहते हैं भई नहा धो कर बैठो, प्रभु की याद में बैठना हो तो वह कहते हैं चलो वजू करके बैठो। मतलब यह कि चेतन हो कर बैठो। उनके पानी कम है। वह कहते हैं,चलो वजू हाथ, पैर मुंह धो लो। वह भी न हो तो मिट्टी में तयम्मम ही कर लो। मिट्टी से ही हाथ धो लो। मतलब चेतन हो कर बैठो हिन्दीस्तान में पानी बहुत है। इसलिये कहते हैं। नहा-धो कर बैठो। मुसलमान फ़कीरों ने एक जगह कहा '' ता न शोई दस्त अज दुनिया मयावर यादे हक।'' जब तक दुनिया से हाथ न धो लो प्रभु की याद न करो। कहते हैं क्योंकि -

दर शरायत नेस्ते जायज़, बे वजू करदन नमाज ।

कि शरीयत में, जब तक वजू न कर लो, नमाज़ जायज़ नहीं लिखी। अरे भई जब भी बैठो, दुनिया से नहा-धो कर बैठो। दुनिया को किनारे रख दो , थोड़ी देर के लिये। असल मतलब तो यह है। जिसने ऐसा कर लिया वह कामयाब हो गया। जिसने गुरु वचनों पर फूल चढ़ाये उसका जीवन सफल हो गया। मनुष्य जीवन बड़े भागों से मिला है, इससे वह फ़ायदा उठा गया, नहीं तो सोया रहा आगे भी। अरे भई अब भी दिन चढ़ा है। अब भी सोये रहे तो कब जागोगे ? जगाने का सामान आपके अन्तर में हैं। नाम और शब्द है आप के अन्तर में । मगर हम इन्द्रियों के घाट पर बैठे हैं। जब तक इन्द्रियों के घाट से ऊपर नहीं आयेंगे उससे खाली रह जायेंगे। तो ऐसा महापुरुष जो तुमको ऊपर लाने का तजरबा दे सकता है, पिण्ड से ऊपर लाकर उस हकीकत से जोड़ सकता है, थोड़ा उसका Contact (परिचय) दे सकता है, उसकी शरण में जाओ, तभी तुम्हारी कल्याण होगी। इन्द्रियों के घाट पर सुख दुख के धाम में दुखी सुखी रहोगे, दुनिया में आते-जाते तुम रहोगे। अगर इस से ऊपर आकर तुम्हारी क, ख, नाम के साथ लगने की शुरु हो जाये, उस महारस को पाकर दुनिया के रस फीके पड़ जायेंगे, आना-जाना खत्म हो जायेगा। यह सन्तों का उपदेश है। सब महापुरुषों की बाणियां यही कह रही हैं। ❑